ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ
मासिक

जनवरी-२०२२

जनवरी-२०२२ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

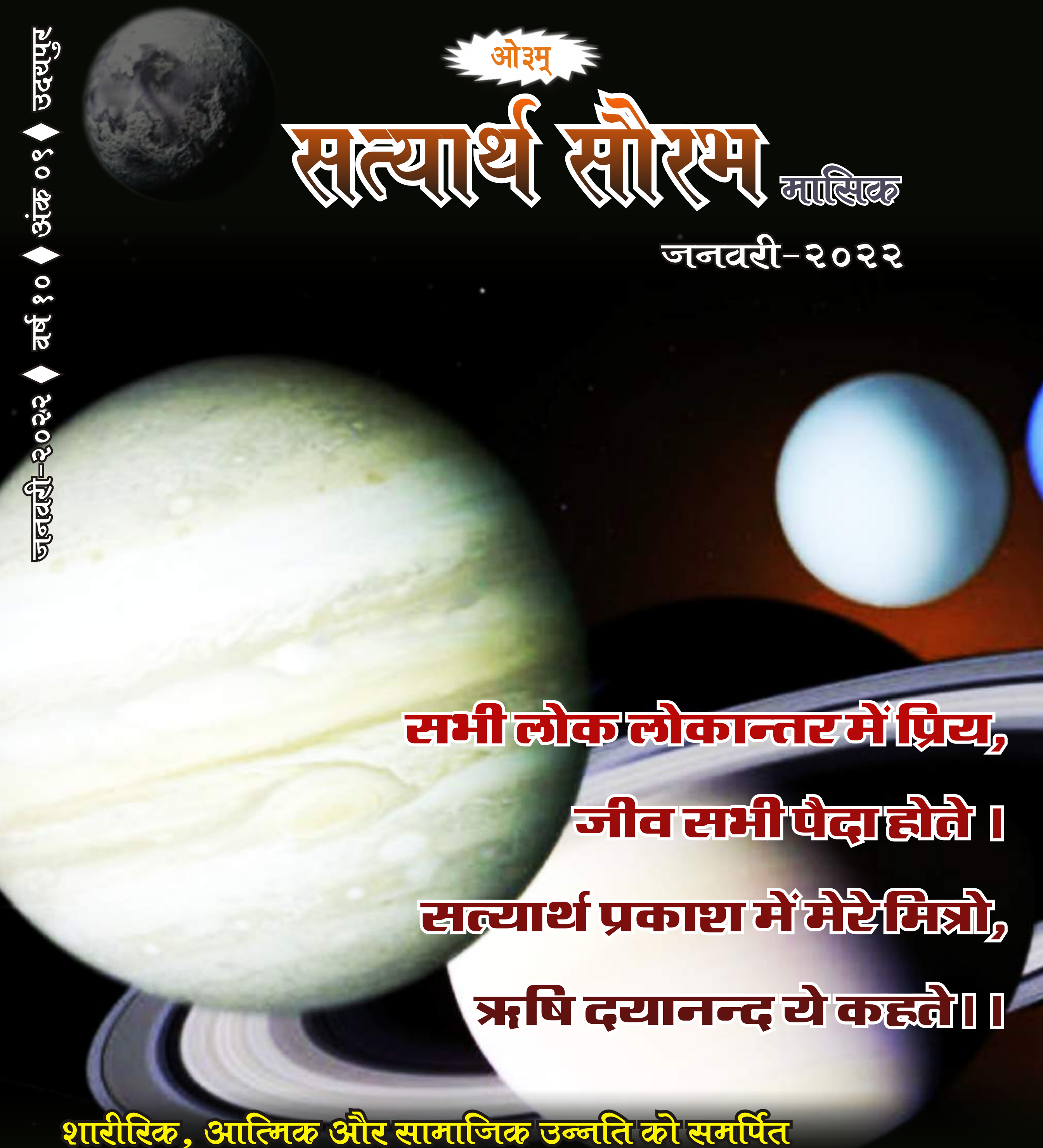

सभी लोक लोकान्तर में प्रिय,
जीव सभी पैदा होते ।
सत्यार्थ प्रकाश में मेरे मित्रो,
ऋषि दयानन्द ये कहते।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १२३

मसालों का शहंशाह
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK
KASOORI METHI
Achari Aloo masala
अचारी आलू मसाला
Veg Biryani masala
वेज बिरयानी मसाला
Karahi Paneer masala
कढ़ाही पनीर मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
पौष शुक्ल पंचमी
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

January - 2022

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थ मित्र बनें
११ भारत में सैक्यूलरिज्म
१३ शक्ति से बड़ी होती है सहनशक्ति
१८ समय का सदुपयोग करो
१९ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/२१
२० ईश्वर को जहाँ देखना चाहिए ...
२३ वैदिक कर्म-फल सिद्धान्त ......
२५ नव्य निराला छन्द
२६ पालक और उड़द हैं गुणकारी
२७ कथा सरित- धनसारी के ठग
३० सत्यार्थ पीयूष- वेद ज्ञान की .....

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी – श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
वर्ष - १० अंक -०९
मुद्रण – द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम। - यजुर्वेद २३/३

अर्थ- (**यः**) जो (**प्राणतः**) प्राणवाले और (**निमिषतः**) अप्राणिरूप (**जगतः**) जगत् का (**महित्वा**) अपने अनन्त महिमा से (**एकः इत्**) एक ही (**राजा**) विराजमान राजा (**बभूव**) है (**यः**) जो (**अस्य**) इस (**द्विपदः**) मनुष्यादि और (**चतुष्पदः**) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (**ईशे**) रचना करता है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखस्वरूप (**देवाय**) सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा-पालन में समर्पित करके (**विधेम**) विशेष भक्ति करें।

विज्ञान

'जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है।' इसका अभिप्राय यह है कि यह दृश्यादृश्य, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष ब्रह्माण्ड रूप जगत् चर-अचर, जड़-चेतन रूप से दो प्रकार का है। इसको हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि न खानेवाला जड़ और खानेवाला चेतन अप्राणिरूप और प्राणवाला है। वह परमेश्वर इस प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत्=ब्रह्माण्ड का अपने अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है।

प्रश्न- उसके अनन्त महिमा से तात्पर्य क्या है?

उत्तर- उसके अनन्त महिमा से तात्पर्य यह है कि भूत-भविष्यत्-वर्तमान तीनों कालों में जितना यह संसार है, सो सब इस पुरुष की ही महिमा है।

प्रश्न- संसार का तो परिमाण है तो उसके महिमा का भी परिमाण हुआ, तो निश्चित उसका अन्त होगा?

उत्तर- इस ईश्वर का अनन्त महिमा है अर्थात् अन्त नहीं।

प्रश्न- क्यों? जो यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हो रहा है, सो सब इस ईश्वर के एक देश में बसता है; अर्थात् परमात्मा इस ब्रह्माण्ड से परिपूर्ण और अति प्रशंसित और बड़ा है। इस जगत्स्रष्टा के तीन अंश नाशरहित=अमृत=मोक्षस्वरूप अपने द्योतनात्मक स्व-स्वरूप में हैं। अर्थात् प्रकाश्यमान जगत् एक गुण है और प्रकाशक उससे त्रिपुण=तिगुना है। अब हम इसको सार रूप में इस प्रकार समग्रता से कह सकते हैं-

यह सब सूर्य-चन्द्रादि लोक-लोकान्तर चराचर=प्राणवाले और अप्राणिरूप जितना जगत् है, वह सब चित्र-विचित्र रचना के अनुमान से परमेश्वर के महत्व को सिद्ध कर उत्पत्ति-स्थिति और प्रलय रूप से तीनों कालों में घटने-बढ़ने से भी परमेश्वर के चतुर्थांश में ही रहता, किन्तु इस ईश्वर के चौथे अंश की भी अवधि को नहीं पाता। और ईश्वर के सामर्थ्य के तीन अंश अपने अविनाशि=मोक्षस्वरूप में सदैव अर्थात् उत्पत्ति-स्थिति और प्रलय में नहीं आते हैं, सदा प्रकाशस्वरूप में ही बने रहते हैं। इस कथन से इस ईश्वर का अनन्तपन नहीं बिगड़ता, किन्तु जगत् की अपेक्षा उसका महत्त्व और जगत् का न्यूनत्व जाना जाता है। वह मोक्षस्वरूप, सर्वाधिष्ठाता, प्रकाशकों का भी प्रकाश करनेवाला होने से इस अपने अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है। कुछ लोगों ने अपने ज्ञान को महत्त्व देते हुए ऋषि के ज्ञान को हीन समझकर **'विराजमान राजा'** के स्थान पर अपनी बुद्धि से **'राजा विराजमान'** कर दिया। अब इसकी परीक्षा करते हैं-

बदले हुए वाक्य में राजा पहले बना और विराजमान बाद में हुआ। तो प्रश्न है कि राजा किसने बनाया और विराजमान कहाँ हुआ? उससे पहले कौन राजा था? जब मर जायेगा, तब राजा कौन बनकर विराजमान होगा? ये अनुत्तरित प्रश्न हैं। क्योंकि वह अमर और नित्य तथा स्वयंभू है। अतः जब कोई नहीं था प्रलय में, तब भी वह विराजमान और प्रकाश कर रहा था;

इसलिए 'विराजमान राजा' है यह नित्य ईश्वर का नित्यत्व है। 'राजा विराजमान है' कहकर उसके नित्यत्व तथा सर्वदा एकरसत्त्व पर आघात कर दिया, जोकि सर्वथा किसी के वश की बात नहीं है। इसलिये 'एक ही विराजमान राजा है'- यही ऋषि का वचन समीचीन है। वह एक विराजमान राजा जो नित्य और अनादि है। दो पग वाले मनुष्यादि और चार पग वाले गौ आदि पशुओं के शरीर की रचना करता है। ईश्वर का ज्ञान अनादि होने से जैसा जीवों का कर्मज्ञान है, वैसा उसका दण्डज्ञान भी अनादि है। उसी कर्मज्ञान से दो पग वाले मनुष्यादि और चार पग वाले गौ आदि पशुओं के शरीर की रचना करता है। शरीरों की रचना करने पर भी वह राजा है, अर्थात् अधिष्ठाता है। इन शरीरों की सब व्यवस्थाएँ अपने आधीन रखता है, जो जीव के लिए अवस्थाएँ हैं।

प्रश्न- आपने अपनी इस व्याख्या में **'प्राणतः'** का प्राण वाले अर्थ किया है, ठीक है; परन्तु **'निमिषतः'** का अर्थ अप्राणिरूप कैसे कर दिया? जबकि महर्षिजी ने यजु. २३/३ में 'नेत्रादि से चेष्टा करता हुआ' 'निमिषतः' का अर्थ किया है। यह क्यों?

उत्तर- मित्रवर! दोनों ही अर्थ महर्षि जी के किए हुए हैं। इसलिए इन दोनों अर्थों में विरोध ढूँढ़ना व्यर्थ है। ऋषि के अर्थों में परस्पर विरोध नहीं होता, अपितु अर्थ वैचित्र्य तथा नवीन रहस्य ही प्रकाशित होता है। उच्चावच मन्त्रों में अर्थात् गूढ़ अभिप्राय वाले मंत्रों तथा अवच अर्थात् अल्प अभिप्राय वाले मंत्रों में मंत्र-दृष्टि होने से ऋषि होते हैं।

अब देखिए- यजुर्वेद २३/३ में **'निमिषतः'** का अर्थ **'नेत्रादिना चेष्टां कुर्वतः'** 'नेत्रादि से चेष्टा करते हुए' क्यों है? उत्तर है कि- **'मिषतः'** यहाँ पर अव्यय है। **'मिषतः=निमेषोन्मेषवता प्राणिनः, निमेष=चक्षुर्निमीलनम्, उन्मेषः=चक्षुरुन्मीलनम्। मिषः=निमेष उन्मेषश्च।'** 'चक्षुओं का निमीलन और उन्मीलन अर्थात् पलक का नीचे की ओर चेष्टा तथा ऊपर की चेष्टा' अर्थ हुआ। मिष का अर्थ ही निमेष और उन्मेष है। लेकिन संस्कारविधि में **'निमिषतः'** का अर्थ इसलिए अप्राणिरूप किया है, क्योंकि यहाँ निमिषतः में **'नि'** पूर्वक **'मिष् स्पर्द्धायाम्'** (तुदा.) धातु से शत्रान्तात् षष्ठी है। अर्थात् **'मिष्'** धातु **'स्पर्द्धा'** में प्रयुक्त है। स्पर्द्धा ईर्ष्या में होती है। ईर्ष्या दो में होती है। जब **'प्राणतः'** का अर्थ प्राणवाले है तो **'स्पर्द्धा'** अर्थात् ईर्ष्या में विरोध को प्रकट करेगा; अर्थात् अप्राणि अर्थ होगा। इसमें कुछ विरोध नहीं, अपितु अर्थ विशिष्टता से अर्थ वैचित्र्य ही कहा जायेगा। इस प्रकार के प्रयोग ऋषियों ने अन्य स्थलों पर भी किए हैं। उनकी यहाँ चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

'कस्मै देवाय हविषा विधेम'- सुखस्वरूप सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना, अर्थात् **(हविषा)** अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके **(विधेम)** विशेष भक्ति करें।

उस सर्वोपरि स्वामी, अधिष्ठाता, आनन्दस्वरूप कमनीय ईश्वर के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री अर्थात् आत्मा-प्राण-मन आदि आज्ञा पालन में समर्पित करके उसकी परिचर्या करें। भाव यह है कि जो एक ही सब जगत् का महाराजाधिराज सकल ऐश्वर्ययुक्त न्यायाधीश है, उसी की उपासना से धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष फलों को पाकर सन्तुष्ट होवें।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली
साभार- उपासना-विज्ञान

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ मात्र) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।**

न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्री भवानीदास आर्य, उदयपुर

डॉ. रमेश गुप्ता, न्यूजर्सी

श्री विरेन्द्र अग्रवाल, मुम्बई

श्री कैलाश जुवाल, मुम्बई

श्रीमती सुचिता अग्रवाल, जयपुर

श्रीमती सरस्वती गहलोत, जोधपुर

श्री पीयूष जैन, उदयपुर

डॉ. सत्यप्रकाश, हरिद्वार

श्री विनोद राठौड़, उदयपुर

श्री इन्द्र प्रकाश यादव, उदयपुर

श्री किशन लाल गहलोत, जोधपुर

श्री सुधाकर पीयूष, उदयपुर

श्री प्रकाश जी, महू

श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर

श्री जे. के. अग्रवाल, अजमेर

श्रीमती मनोरमा गुप्ता, उदयपुर

आत्म निवेदन

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन......!!!

जन्नत, स्वर्ग, पैराडाइज जैसे शब्दों के साथ एक ऐसे स्थान विशेष की कल्पना प्रायः मत-मतान्तरों में की गयी है जहाँ कि व्यक्ति मरने के बाद जाता है। मोटे तौर पर यह स्थान उस मत विशेष के ईश्वर का रहने का स्थान है (यद्यपि सिद्धान्ततः उन्होंने ईश्वर को निराकार भी माना है)। जब ईश्वर का स्थान है तो वह सर्वश्रेष्ठ है ऐसी कल्पना की जानी भी स्वाभाविक है अतएव वहाँ लगभग अनन्त और असीम की श्रेणी का सुख जैसा मिलता है। इस स्थान विशेष का मतों की किताबों में अलग-अलग प्रकार का विशद् वर्णन मिलता है, इसकी लोकेशन भी भिन्न-भिन्न है। जो सामान्य बात है वह यह है कि आनन्द व सुख मिलता है। अभी तक विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि वह तथाकथित चौथे वा सातवें आसमान को पार कर चुका होगा, पर ऐसे वर्णनों से युक्त किसी स्थान का उसे पता नहीं चल पाया है। जिनके बारे में यह दावा किया जाता है कि वे सशरीर जन्नत घूम आये हैं उन्हें छोड़कर आज तक किसी ने इन स्थानों को नहीं देखा है। अतः ऐसे स्थलों की स्थिति सन्देह से परे नहीं है। यहीं पर इन सुख से भरपूर स्थानों के अतिरिक्त जहन्नुम, दोज़ख, नरक या ऐसे ही नामों से ऐसे स्थान की कल्पना भी की गयी हैं जो दुःखों से परिपूर्ण है और ये नारकीय दुःख सोचने मात्र से भी सिरहन पैदा कर देते हैं।

अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग तथा बुरे कर्म करने वालों को नरक मिलेगा यह व्यवस्था इसलिए लिखी हो कि लोग अच्छे कर्म करने में प्रवृत्त हों तो यह कल्पना सोद्देश्य तो कही जायेगी परन्तु इस्लाम में जन्नत/दोजख का मिलना केवल सुकर्मों अथवा दुष्कर्मों पर आश्रित नहीं है। स्वमत का अनुयायी कैसा भी हो तथा उस मत की बढ़ोतरी करने हेतु कितने भी जघन्य अपराध कारित करे वह निश्चित जन्नत का अधिकारी है, यह कल्पना न केवल पक्षपातयुक्त है वरन् इस लोक में जघन्य अपराधों को बढ़ावा देने वाली और उन्हें आभासी नैतिक जामा पहनाने की कोशिश है, जिसका निर्मूलन जितना शीघ्र हो जाय वह संसार में शान्ति स्थापित करने में सहायक होगा।

जन्नत की अवधारणा ने अपने मतस्थ जनों को सर्वाधिक प्रभावित किया है और वे गंभीरता पूर्वक इसके अस्तित्व तथा प्राप्ति के उपायों में विश्वास करते हैं। इसके कारण सम्पूर्ण विश्व में उथल-पुथल मची है अतः इस पर चर्चा होती रहती है। सामान्य दृष्टि से देखा जाय तो अच्छे कर्मों का सम्बन्ध जन्नत से हो सकता है और बुरे कर्मों का जहन्नुम से, परन्तु हत्या, बलात्कार जैसे कर्मों का फल भी जन्नत हो सकती है, यह बात कैसे गले उतर सकती है और क्या इस प्रकार के लालच संसार में अपराधों को बढ़ावा नहीं देंगे? निश्चित देंगे बल्कि दे रहे हैं, यही स्थिति चिन्त्य है।

और यह काल्पनिक जन्नत भी क्या है? केवल दुनियावी सुखों का एक्सटेंशन ही तो है। ईश्वर प्राप्ति अथवा अध्यात्म जैसी कोई बात उसमें नहीं है। हम इस्लामी साहित्य से केवल कुछ उदाहरण जन्नत की सुविधाओं के बारे में जो लिखा है, उसे दर्शाने हेतु दे रहे हैं। कुरआन में जन्नत की अवधारणा कैसी है, इसके लिए मुस्लिम विद्वानों और कुरआन व हदीसों का अध्ययन करें तो

यह अवधारणा लगभग उसी रूप में है जिसमें बहुप्रचारित है। ९वीं शताब्दी के विद्वान् अल-तिरमिधी की 'सुन्ना की किताब' कहती है जन्नत एक हकीकत है। इस किताब के २१वें अध्याय में बताया गया है कि जन्नत जाने वालों को सबसे छोटा ईनाम यह मिलता है कि उन्हें रहने को एक घर मिलता है जिसमें ८० हजार नौकर होते हैं और ७२ बीवियाँ होती हैं। घर में ऊपर एक गुम्बद होता है जो कि मोतियों, नीलम और मणियों से जड़ा होता है। जिसे काफी दूर से ही देखा जा सकता है।'

वस्तुतः जन्नत इस्लाम में एक अत्यन्त आकर्षक धारणा है जिसका वायदा उन सभी से किया गया है जो इस्लाम को अपनाएँगे। देखिये-

जिन लोगों ने कहा कि 'हमारा रब अल्लाह है। फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उन पर फरिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है।' (सूरः मीम ४१/३०)

जन्नत के अन्य आकर्षण जो यद्यपि लौकिक दृष्टि से अनैतिक प्रतीत होते हैं, उनका भी वायदा किया गया है-

'उनके पास किशोर होंगे जो सदैव किशोरावस्था ही में रहेंगे, प्याले और आफताबे (जग) और विशुद्ध पेय से भरा हुआ पात्र लिए फिर रहे होंगे- जिस (के पीने) से न तो उन्हें सिर दर्द होगा और न उनकी बुद्धि में विकार आएगा और स्वादिष्ट फल जो वे पसन्द करें तथा पक्षी का मांस जो वे चाहें।' (सूरः अल-वाकिअः १७-२१)

यह भी कहा जाता है कि जन्नतियों को न पेशाब की जरूरत होगी और न लैटरीन की आवश्यकता, न नाक से नजला बहेगा और न ही थूक आएगी, उनके प्रयोग की कंघियाँ सोने की होंगी, कस्तूरी जैसा खुशबूदार पसीना होगा, अति सुन्दर तथा सुगन्धित लकड़ी में अगरबत्ती का प्रबन्धन होगा, चमकती हुई रोशनियाँ होंगी, बगोले उठाती हुई खुशबुएँ होंगी और मनोरंजन के लिए सुन्दर आँखों वाली हमउम्र हूरें होंगी, उन हूरों की स्थिति बताते हुए अल्लाह पाक ने फरमाया-

'और उनके लिए सुन्दर आँखों वाली हूरें होंगी। ऐसी सुन्दर जैसे छिपाकर रखे हुए मोती।' (सूरः अल-वाकिअः २२-२३)

वे हूरें सफाई में याकूत और सफेदी में मोती या मूंगा की तरह होंगी, वह ऐसी सुन्दर होंगी कि उनके सौन्दर्य की वजह से उनकी टांग का गूदा गोश्त और हड्डी के पीछे से दिखाई दे रहा होगा। सही बुखारी की एक रिवायत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया- 'जन्नतियों की पत्नियाँ इतनी सुन्दर होंगी कि अगर उनमें से एक महिला धरती वालों की ओर झांक ले तो आसमान और जमीन के बीच का सारा हिस्सा चमक उठे तथा खुशबू से भर जाए, और उसके सिर का दुपट्टा इतना कीमती होगा कि वह दुनिया और उसमें जो कुछ है सब से उत्तम है।' (सही बुख़ारीः २७९६)

जन्नत में एक व्यक्ति को सौ आदमी की शक्ति प्रदान की जाएगी (सुन्न तिर्मिजीः २५३६ हसन सहीह), वहाँ अपनी हूरों से खूब आनन्द लेंगे, और यह हूरें अपने पतियों को अत्यधिक सुन्दर और सुरीली आवाज में गाना सुनाएँगी।

यह तो रही जन्नत जिसकी जेहादी कामना करते हैं। शातिर मस्तिष्क इसका लाभ उठाते रहे हैं और आज भी उठा रहे हैं। इतिहास में ऐसे वर्णन मिलते हैं जब जन्नत की अवधारणा का लाभ उठाकर स्वेच्छा से चलाने हेतु मनुष्य रूपी विवेक रहित उपकरण तैयार किये गए।

इस्लाम विशेषज्ञ क्रिस्टोफ लग्जनबर्ग ने एक किताब 'डाइ सीरो-अरामाइश लेसार्ट देस कुरान' लिखी है। उसी पर आधारित एक किताब पाकिस्तान से प्रकाशित 'इस्माईली मुशाहीर' नामक हुयी है। इन पुस्तकों में तेहरान से २०० किलोमीटर दूर एक किले का जिक्र मिलता है जिसका वर्णन प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने किया है, जिसे एक नकली जन्नत का स्वरूप दिया गया ताकि वहाँ की आदत लगाकर नवयुवकों को जन्नत का नशा चढ़ाया जा सके और फिर उसका लालच देकर उन नवयुवकों का उपयोग मनचाहे कार्य में किया जा सके। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

नाजिरी इस्मायीलिओं के मुजाहिद और धर्म गुरु 'हसन बिन सब्बाह ने जब मिस्र में अपनी धार्मिक शिक्षा पूर्ण कर ली तो वह सन् १०८१ में ईरान के इस्फहान शहर चला गया और ईरान के कजवीन प्रान्त में प्रचार करने लगा। वहाँ एक किला था जिसे अलामुंत कहा जाता है। यह किला तेहरान से १०० कि.मी. दूर (वर्त्तमान तेहरान से २०० कि.मी. दूर), केस्पियन सागर के पास है। उस समय किले का मालिक सुलतान मलिक शाह था। उन दिनों चारों तरफ युद्ध होते रहते थे। कभी सल्जूकी कभी फातमी आपस में लड़ते थे। इसलिए सुलतान ने किले की रक्षा के लिए अलवी खानदान के एक व्यक्ति कमरुद्दीन खुराशाह को नियुक्त कर दिया था। उन दिनों किला खाली पड़ा था। हसन बिन सब्बाह ने किला तीन हजार दीनार में खरीद लिया। हसन को वह किला उपयोगी लगा, क्योंकि किला सीरिया और तेहरान के मार्ग पर था। जिस पर काफिलों से व्यापार होता था। किला एक सपाट फिसलन वाली पहाड़ी पर है। किले की ऊँचाई ८४० मीटर है। लेकिन वहाँ पानी के सोते हैं। किले की लम्बाई ४०० मीटर और चौड़ाई ३० मीटर है.... इसके बाद हसन ने अपने लोगों और कुछ गाँव के लोगों के साथ मिलकर काफिले वालों से टेक्स लेना शुरू कर दिया। इससे हसन को काफी दौलत मिली। उसके बाद हसन ने किले में तहखाने और सुरंगें भी बनवा लीं। जब किला हराभरा हो गया तो, हसन ने किले में एक नकली जन्नत भी बना ली। जैसा कुरआन में कहा गया है। हसन आसपास के गाँव से अपने आदमियों द्वारा सुन्दर, और कुंवारी जवान लडकियाँ उठवा लेता था। और लड़किओं को अपनी जन्नत के तहखानों में कैद कर लेता था। हसन ने इस नकली जन्नत में एक नहर भी बनवाई थी, जिसमें हमेशा शराब बहती रहती थी। किले में वह सब सामान थे जो कुरआन में जन्नत के बारे में लिखे हैं।

फिर जब हसन के लोग आसपास के गाँव में धर्म प्रचार करने जाते तो लोगों को विश्वास में लेकर उन्हें हशीस पिलाकर बेहोश

कर देते थे। और जब लोग बेहोश हो जाते तो उनको उठाकर किले में ले जाते थे। उनसे कहते कि अल्लाह तुम से खुश हैं, अब तुम जन्नत में रहो। कुछ दिनों तक ये नादान लोग खूब अय्याशी करते और समझते थे कि वे जन्नत में हैं। फिर कुछ दिनों मौज-मस्ती करवाने के बाद लोगों को दोबारा हशीश पिलाकर वापिस गाँव छोड़ दिया जाता था। एक बार जन्नत का चस्का लग जाने के बाद लोग फिर से जन्नत की इच्छा करने लगते तो, उनसे कहा जाता कि अगर फिर से जन्नत में जाना चाहते हो तो हमारा हुक्म मानो। लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाते थे। ऐसे लोगों को हसिसीन कहा जाता था। मार्को पोलो ने इसका अपने विवरणों में उल्लेख किया है। आज भी लोग इसी का अनुसरण कर जन्नत के लालच में निर्दोषों की हत्याएँ कर रहे हैं।

यह जन्नत बहुत समय तक बनी रही। जब हलाकू खान ने १५ दिसम्बर १२५६ को इस किले पर हमला किया तो किले के सूबेदार ने बिना युद्ध के किला हलाकू के हवाले कर दिया। जब हलाकू किले के अन्दर गया तो देखा वहाँ सिर्फ अर्धनग्न औरतें ही थीं। हलाकू ने उन लड़कियों से पूछा तुम कौन हो, तो वे बोलीं 'अना मलाकुन' यानी हम हूरें हैं।

यह किला आज भी सीरिया और ईरान की सीमा के पास है। सन् २००४ के भूकम्प में किले को थोड़ा सा नुकसान हो गया। लेकिन आज भी लोग इस किले को देखने जाते हैं। और जन्नत की हकीकत समझ जाते हैं कि जैसे यह जन्नत झूठी है वैसे ही मत विशेष में बतायी गयी जन्नत भी झूठ होगी।

यह सभी जानते हैं कि जन्नत का लालच देकर किस कदर आतंकवादियों को तैयार किया जाता है। चाहे अलकायदा हो, जैश-ए-मोहम्मद, बोको हराम या हमास सारे ही अपने लड़ाकों को बताते हैं कि अगर वे मजहब की राह में अपनी जान देंगे तो उन्हें जन्नत नसीब होगी। जन्नत में उन्हें हमेशा युवा रहने वाली और गहरी काली आँखों

वाली ७२ हूरों या ७२ पत्नियों के साथ कभी न खत्म होने वाले कथित आनन्द के बारे में बताया जाता है। (यहाँ यह भी लालच है कि कुरूपता, गरीबी या अन्य कारणों से जिन्हें इस लोक में सुन्दर पत्नी और वो भी एक भी नसीब नहीं हो पायी है, जन्नत में उसकी ये कमियाँ बाधक नहीं रहेंगी। उसके हिस्से में भी समान रूप से सुन्दर हूरें आयेंगी।)

तो यह है वो जन्नत जिसका प्रलोभन इस्लाम में है तथा जिसके आकर्षण में बँधे आतंकी क्रूरतम कर्म करने में भी नहीं हिचकते। एक किले में जिस प्रकार की जन्नत तैयार की गयी उसका अनुसरण हाल में भी किये जाने का उदाहरण सामने आया है। पाकिस्तान में उग्रवादियों के एक गैंग ने इसी प्रकार की नकली जन्नत तैयार की जिसमें बॉलीवुड अभिनेत्रियों के चित्र लगाए गए। जब तालिबान बना और ये उग्रवादी अफगानिस्तान कूच कर गए तब पाकिस्तानी आर्मी के हाथ यह जगह पड़ी। ऊपर के किले जैसी जन्नत बनायी गयी थी। समझा जा सकता है कि आतंकियों के सरगना इसे किस काम में लेते होंगे।

आज विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है पर ये मत-मतान्तरों में उल्लिखित विभिन्न आसमान तथा जन्नत/स्वर्ग कहाँ हैं यह जनाकारी उन्हें नहीं मिल पायी है। वस्तुतः ये हैं तो काल्पनिक परन्तु इनके अनुयायियों पर इतना गहरा असर है कि वे इन्हें प्रत्यक्ष सत्य की भाँति स्वीकार करते हैं।

गत दिनों राजस्थान में ही एक दिल दहलाने वाला कृत्य सामने आया जिसमें आरोपी ने इसलिए अपनी माँ तथा पिता को मार दिया कि वे यहाँ दुखी थे, मरकर जन्नत जायेंगे तो सुखी हो जायेंगे।

न्यूज १८ के अनुसार राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में एक बुजुर्ग की हत्या मामले में पुलिस ने उसी के बेटे को मुख्य आरोपी बनाया है। पुलिस का दावा है कि ६८ वर्षीय बुजुर्ग इब्राहिम खान की हत्या उसके छोटे बेटे कुतुबुद्दीन ने बीते शुक्रवार को की। पुलिस ने आरोपी बेटे से पूछताछ के बाद कई अहम खुलासे किए हैं। पुलिस के मुताबिक आरोपी बेटे को उसके अपने ही अब्बा की हत्या का कोई पछतावा नहीं है, उल्टे आरोपी ने कहा कि 'अब्बा तड़प रहे थे, मैंने उन्हें जन्नत पहुँचा दिया। अल्लाह की मर्जी थी कि मैं उन्हें जन्नत भेजूँ, अल्लाह ने उनको मेरे द्वारा जन्नत बुलवाया है। मुझे कोई पछतावा नहीं है।'

आरोपी ने पुलिस को बताया कि पिता की हत्या से पहले उसने अपनी माँ की भी हत्या कर दी थी। सनकी (?) युवक का कहना है कि उसे ये सब करने के लिए अल्लाह ने कहा है। आरोपी युवक ने बताया कि उसने अपनी भाभी को भी मारने की प्लानिंग की थी।

उक्त घटना से स्पष्ट है कि जन्नत आदि की काल्पनिक धारणा, अशिक्षा व मजहबी कट्टरता के चलते किस प्रकार व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर छा गयी है और पूरे विश्व में इसके दुष्परिणाम देखे जा रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऐसी काल्पनिक अहितकारी धारणाओं को समूल नष्ट करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में स्पष्ट लिखा है कि-

'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है और नरक जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है। अतः स्वर्ग की स्थापना यहीं धरती पर होती है।

इसीलिए मैथिली के राम कहते हैं-

सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

जो श्री राम ने अपने जीवन में किया, जन्नत दोजख के चक्कर में न पड़कर उसका अनुसरण मानव मात्र करे तो धरती पर स्वर्ग स्थापित होने में क्या शंका शेष रहे?

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

भारत में सैक्यूलरिज्म

सीताराम गोयल

हमने इस धारणा 'सैक्यूलरिज्म', का आयात आधुनिक योरप से किया है। योरप में ईसाई चर्च ने बहुत रक्तपात किया था एक-सौ-वर्ष, दो-सौ-वर्ष व्यापी युद्ध लड़े थे। ईसाइयत का उदय होते ही योरप एक गहन अंधकार में डूब गया था। मानवीयता, बुद्धिप्रवणता तथा सर्वजन हिताय-भावना जिनको मानव-सुलभ आस्थाएँ माना जाता है, वे सब ईसाइयत की हठधर्मिता के नीचे दब गईं थीं। योरप के कुछ लोगों ने ईसाइयत के विषय में विचार करना शुरू किया, विशेषतया ईसाइयत के उस पक्ष का परीक्षण जिसके अनुसार चर्च ने राजतन्त्र को पाशबद्ध किया हुआ था। योरप का सम्पर्क भारत, चीन तथा कई-एक अन्य देशों की प्राचीन संस्कृतियों से हो चुका था। फलस्वरूप वहाँ मानववाद, बुद्धिवाद तथा विश्ववाद की एक नई लहर उठने लगी थी। वहाँ चर्च के विरुद्ध एक संघर्ष का सूत्रपात हुआ और धीरे-धीरे राजतन्त्र को चर्च के चंगुल से छुड़ा लिया गया था। इस संघर्ष ने ही योरप में 'सैक्युलरिज्म' की धारणा को जन्म दिया था।

यह एक बहुत ही कल्याणकारी धारणा थी, विशेषतया उन देशों के लिए जो मतान्ध राजतन्त्रों द्वारा पीड़ित थे, जो ईसाइयत की अमानवीय तत्वमीमांसा द्वारा दलित थे। यह धारणा अब भी उन देशों के लिए कल्याणकारी है जो इस्लाम के चंगुल में फंसे हुए हैं। किन्तु भारतवर्ष में इस धारणा का प्रचार उस हिन्दू समाज को लक्ष्य करके किया जा रहा है जिसमें धर्म को लेकर कभी कोई मारकाट नहीं मची, धर्म को लेकर कभी कोई तनाव नहीं खड़ा हुआ। अभी कुछ दिन पहले मैं पूर्व के कई-एक देशों की यात्रा कर रहा था। चीन के बौद्ध भिक्षुओं से बात करने का अवसर मुझे मिला। मैंने उनसे पूछा- 'चीन में बौद्ध धर्म बाहर से आया था। चीन में कन्फ्यूसियस द्वारा प्रवर्तित धर्म पहले से विद्यमान था। ताओ द्वारा प्रवर्तित धर्म भी। क्या बौद्ध धर्म तथा चीन के पुराने धर्मों के बीच कोई द्वन्द देखा गया?' उन्होंने उत्तर दिया- 'नहीं, कभी नहीं।' द्वन्द का एक भी अवसर इसलिए नहीं आया कि कन्फ्यूसियस तथा ताओ के धर्म भी अध्यात्म की उसी गहन-गम्भीर भूमि से उद्भूत हुए थे जिससे कि सनातन धर्म की सरिता बह कर आई थी, जिससे कि बौद्धधर्म, जैनधर्म तथा वैष्णवधर्म का उद्‌गम हुआ था।

इन धर्मों में मानवजाति को दिए गए एक ही अध्यात्म-सन्देश के विविध पर्याय पाए जाते हैं। मैंने जापान में यह जानने की कोशिश की कि बाहर से आए हुए बौद्धधर्म के साथ वहाँ के प्राचीन शिन्तो धर्म का क्या कभी कोई संघर्ष हुआ। वहाँ भी मुझे यही उत्तर मिला कि ये दोनों धर्म कभी आपस में नहीं टकराए। आज भी वहाँ दोनों धर्म परस्पर सौहार्द के साथ रह रहे हैं। मेरी एक टैक्सी चालक के साथ चर्चा चली। वह एक प्रबुद्ध व्यक्ति था। उसने मुझसे कहा- 'मैं तो बौद्ध भी हूँ और शिन्तो भी।' प्राचीन ग्रीस, प्राचीन रोम तथा एशिया और योरप के अन्यान्य प्राचीन देशों की कहानी भी यही है।

'ईसाइयत के उदय से पहले धर्म को लेकर कभी कोई युद्ध नहीं हुआ था। धर्म के नाम पर होने वाले युद्धों का सूत्रपात सर्वप्रथम ईसाइयत ने ही किया। इस्लाम का आविर्भाव होने पर ये युद्ध और भी रक्तरंजित हो उठे। किन्तु योरप में मानववाद, बुद्धिवाद तथा विश्ववाद की लहर उठने से राजतन्त्र पर से ईसाइयत का सिक्का समाप्त हो गया। और इस प्रकार 'सैक्युलरिज्म' की धारणा ने जन्म लिया। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ यह धारणा योरप के प्रसंग में बहुत कल्याणकारी सिद्ध हुई। परिणामस्वरूप योरप के समाज ने बहुत प्रगति की, योरप में विज्ञान का विकास हुआ, तकनीक का विकास हुआ और योरप के देश सामाजिक कल्याण की दिशा में आगे बढ़े। यह सब सम्पदा योरप को सैक्युलरिज्म की धारणा से ही उपलब्ध हुई, किन्तु हिन्दू समाज तो सदा ही और स्वभावतः ही एक सैक्यूलर समाज रहा है। हिन्दू समाज में धर्म को लेकर कभी कोई रक्तपात नहीं हुआ। हिन्दू समाज ने कभी किसी मतान्ध राजतन्त्र को जन्म नहीं दिया। किसी भी हिन्दू राजा का उदाहरण ले लीजिए। व्यक्तिगत निष्ठा के नाते वह चाहे बौद्ध रहा हो, चाहे जैन, चाहे वैष्णव, चाहे किसी अन्य सम्प्रदाय का अनुयायी, किन्तु उसके दरबार में, उसके राज्य में सभी धर्मों का समानरूप से सत्कार हुआ है, समानरूप से संरक्षण हुआ है। अथवा यह कहना अधिक समीचीन होगा कि इस देश में सन्त-महात्मा ही राजा के श्रद्धाभाजन रहे हैं, न कि राजा सन्त-महात्माओं का श्रद्धाभाजन। यहाँ के सन्त-महात्माओं को 'आर्चबिशप ऑफ

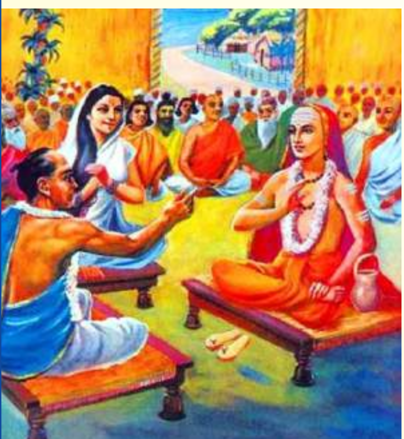

कैन्टबरी' की नाई राजा के दरबार में हाजिर नहीं होना पड़ा। इंग्लैंड का राजा वहाँ के धर्म का परित्राता कहलाता है। किन्तु भारत में राजा को ऋषियों, मुनियों तथा सन्त-महात्माओं की शरण में जाकर उपदेश सुनना पड़ता था। इस प्रकार के इस देश में, इस समाज में योरप से सैक्युलरिज्म की धारणा का आयात किया गया है। यही नहीं, सैक्युलरिज्म की धारणा का उपयोग हिन्दू समाज के विरुद्ध एक अस्त्र के रूप में किया जा रहा है। आप सब यह जानते हैं कि सैक्युलरिज्म का अर्थ इस देश में क्या है। इस शब्द को सुनते ही आपको इसमें भरी हिन्दू-विद्वेष की भावना का संकेत मिलता है।'

'इस देश में आज सैक्युलरिज्म का एक ही काम है- हिन्दू समाज को कोसना, हिन्दू संस्कृति को कोसना, हिन्दू इतिहास को कोसना। जो कुछ हिन्दू कहा जाता है उस सबको कोसना ही सैक्युलरिज्म कहलाता है। सैक्युलरिज्म के शब्दकोष में मुसलमान एक अल्पसंख्यक समुदाय है, ईसाई भी एक अल्पसंख्यक समुदाय है। किन्तु हिन्दू समाज एक 'वीभत्स' बहुमत है। ... सैक्यूलरिज्म के इस अनाचार को देखकर, सैक्यूलरिज्म द्वारा प्रसारित इस हिन्दू-विद्वेष को देखकर, हिन्दू समाज को यह आभास होने लगा है कि कहीं न कहीं कोई बहुत बड़ा घोटाला है। सैक्युलरिज्म का प्रश्रय पाकर तथाकथित अल्पसंख्यक समाज उत्तरोत्तर उद्धत होते जा रहे हैं। ईसाई मिशनरियों को अरबों डालर पाश्चात्य राष्ट्रों के सैन्य-प्रतिष्ठानों से, गुप्तचर-संस्थानों से तथा अन्यान्य सरकारी विभागों से प्राप्त होते हैं। इस प्रचुर धनराशि को इस देश में लाकर ये लोग बड़े-बड़े मिशनों की स्थापना करते हैं, गिरजाघर बनाते हैं, हिन्दुओं को ईसाई बनाने में व्यय करते हैं। इस प्रकार इस देश में ईसाइयत का 'प्रकाश' फैलाया जा रहा है। इस्लाम भी यही सब कर रहा है। जब से पेट्रोल के बदले में प्राप्त मुद्रा का भण्डार भरने लगा है, जब से अरब देश धनाढ्य होने लगे हैं, तब से इस्लाम का आत्मविश्वास इस देश में बहुत बढ़ गया है। देश के विभाजन के बाद इस्लाम का आत्मविश्वास कुछ-कुछ कुण्ठित हो गया था। किन्तु अब वह फिर से मुस्लिम लीग के दिनों की याद दिलाने लगा है।'

- सीताराम गोयल

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०८/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालंधर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्रीमती संतोष चावला; गाजीपुर (दिल्ली), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ. प्र.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री गोपाल लाल राव; निम्बाहेड़ा (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 17 पर अवश्य पढ़ें।

सहनशक्ति बढ़ाने के लिए इस प्रकार से विचार करें-

दुःख आने से कौन से लाभ हो रहे हैं! यदि यह दुःख न होता तो कितनी बड़ी हानि होती?

जो औषधि मनुष्य के रोग निवृत्ति का साधन हो, चाहे वह कितनी भी कड़वी क्यों न हो उसे बुरी कौन कहता है? और उससे घृणा कौन करता है? वह तो सुख रूप हैं तथा उस औषधि के प्रदाता को कौन बुरा कह सकता है? अतः एक ज्ञानी व विवेकी पुरुष के लिए दुःख वास्तव में सुखरूप ही है। दुःख या कठिनाई के बिना किसी प्रकार की उन्नति, विस्तार और परिवर्तन नहीं हो सकता। यदि दुःख न होता तो संसार एक ही अवस्था में स्थिर रहता और मनुष्य जाति थकान आलस्य से पीड़ित होकर नष्ट हो जाती।

जब कोई विघ्न या कष्ट सम्मुख उपस्थित हो तो मनुष्य को प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि विघ्न, कष्ट और कठिनाई के उपस्थित होने का अर्थ यह है कि मनुष्य मूर्खता और उदासीनता की किसी विशेष सीमा तक पहुँच गया है और अब उस रुकावट से उसे अपने आप को अलग करने के लिए और सन्मार्ग ढूँढने के लिए अपने विशेष प्रयत्न और विशेष बुद्धि का प्रयोग करना पड़ेगा। ऐसा समझना चाहिए कि मानो अब उसकी आभ्यन्तर शक्तियाँ स्वतंत्रता, अभ्यास तथा बुद्धिमत्ता के अवसर के लिए पुकारने लगी हैं।

कोई भी स्थिति या अवस्था स्वयं कोई कठिनाई या दुःख नहीं है उस अवस्था के आन्तरिक मर्म को समझने की और उसके साथ जो व्यवहार किया जाता है उसको समझने की न्यूनता का नाम कठिनाई, विघ्न या दुःख है। बस समझ का फेर है।

इसलिए संकट या दुःख से असंख्य लाभ होते हैं और जिस कारण का कार्य उन्नति कराता है व असंख्य लाभ देता है वह तो सुख का ही एक रूप है इसलिए ज्ञानी व्यक्ति दुःख आने पर घबराता नहीं, कष्ट नहीं मनाता अपितु बुद्धिमत्ता का अवसर जानकर हर्षित होता है।

दुःख आने से जो लाभ होते हैं वह असंख्य हैं उनकी कोई गणना नहीं है लेकिन हम यहाँ पर कुछ मुख्य लाभ जो सभी को दिखते हैं वे प्रस्तुत करते हैं-

१. दुःख आने से सबसे बड़ा लाभ तो यह होता है कि व्यक्ति ईश्वर की ओर उन्मुख हो जाता है यदि दुःख न आए तो ईश्वर को तो दुनिया पूरी तरह भुला ही देगी।
२. दुःख आने से संसार से वैराग्य आता है जो मुक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यदि दुःख न आए तो संसार में ही आसक्ति रहेगी, व्यक्ति भोगों में ही फंसा रहेगा।
३. दुःख आने से व्यक्ति धार्मिक होने लगता है क्योंकि दुःखी या रोगी व्यक्ति अधर्म की बातें नहीं सोचता, धर्म के बारे में सोचता है। यदि मैं ठीक हो गया तो अमुक-अमुक अच्छा कार्य करूँगा, ऐसा दुःख या रोग आने पर ही सोचता है।
४. दुःख आने पर एक बहुत बड़ा लाभ यह होता है कि व्यक्ति का अपनी बुराइयों की ओर, अपनी गलतियों की ओर ध्यान जाता है कि मुझसे क्या क्या दोष हुए हैं या हो रहे हैं।
५. दुःख आने से व्यक्ति चिकित्सक बन जाता है जिसको शुगर हो जाता है वह कुछ साल बाद शुगर को ठीक करते-करते उसका स्पेशलिस्ट बन जाता है, जिस व्यक्ति को जेल हो जाती है तारीख पर तारीख जाते-जाते आधा वकील तो वह भी बन जाता है।
६. दुःख आने पर व्यक्ति प्रेरक बन जाता है, वह अपने,

दूसरे परिवार व बच्चों को बोलता है कि मैंने यह गलती की है, आप मत करना मैंने यह दुःख उठाया है, आप इससे बचना, दूसरों को प्रेरणा देता है। कब? जब दुःख आया।

७. दुःख आने पर व्यक्ति ज्ञानी बन जाता है। शायद दुःख आने पर ही आप सब लोग भी अपनी समस्या के निवारणार्थ विशेषज्ञों से मिले होंगे और आपको गुरुजनों से जुड़कर बहुत सारा शास्त्रों का, वेदों का ज्ञान मिला यदि आपको दुःख/समस्या न आयी होती तो शायद हम भी कभी न मिले होते।

८. दुःख आने का एक लाभ यह भी होता है कि इस संसार में मेरा अपना कौन है? इसका पता चल जाता है अपने पराए का भेद दुःख आने पर ही पता चलता है। सुख में तो फेसबुक के भी ५००० फ्रेण्ड होते हैं, दुःख आने पर पता चलता है कि वास्तव में असली मित्र कौन सा है?

यदि यह दुःख न होता तो यह भी पता ना चलता कि दुनिया में मेरा अपना कौन है? और व्यक्ति हमेशा भ्राँति में ही जीवन गुजार देता।

९. दुःख आने पर व्यक्ति धैर्यवान बन जाता है तथा दुःख दूर करते-करते आत्मविश्वास से भर जाता है, कि हाँ मैंने एक बड़े शत्रु से टक्कर ली है, उसको पराजित किया है यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। लोग तो थोड़ा सा कांटा लगने से भी तड़प उठते हैं मैंने तो इतने महान् दुःख को झेला है यह आत्मविश्वास बहुत बड़ी चीज है।

१०. दुःख आने का एक लाभ यह भी है कि हमारा एक पाप कर्म क्षीण हो जाता है पाप कर्माशय घट जाता है, हो सकता है यह दुःख हमारे ही किए गए किसी गलत कर्म का परिणाम था, जो हमने भोग लिया अब आगे नहीं भोगना पड़ेगा। यह सजा तो काटनी ही थी! चलो भविष्य में काटनी पड़ती वर्त्तमान में ही कार्य निपट गया।

११. दुःख आने के बाद ही मनुष्य तपकर शुद्ध सोने की तरह बनता है यदि दुःख न आए तो मनुष्य के जीवन में तप करने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।

१२. दुःख आने का एक लाभ यह भी होता है कि मनुष्य दूसरों के दुखों का अनुभव करने लगता है जो अपने पर बीतता है दूसरों के दुःख को अनुभव भी वही कर पाता है।

१३. दुःख आने पर व्यक्ति दयालु व परोपकारी बन जाता है यह क्या छोटी बात है।

१४. दुःख आने पर व्यक्ति खोजी बन जाता है वैज्ञानिक बन जाता है, योगी बन जाता है, ईश्वर को प्राप्त कर लेता है।

१५. दुःख आने पर व्यक्ति सहनशील बन जाता है।

और इतने सारे उपरोक्त लाभ होने पर फिर भी यदि आपको तनिक सन्देह है तोसोच लेना कि प्रत्येक दुःख के पीछे एक सुख छिपा होता है प्रत्येक रात्रि के पीछे एक सूर्योदय होता है कोई भी दुःख हमारे अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ नहीं रह सकता इसके पीछे हमारा कल्याण छिपा होता है, ईश्वर की दया व न्याय छिपा होता है

इसलिए दुःखों से कभी घबराना नहीं चाहिए और विचलित नहीं होना चाहिए यह जीवन एक कुरुक्षेत्र है, युद्ध भूमि है इसमें हमें बलिदान दिए बिना कुछ भी उपलब्धि नहीं हो सकती। यह जीवन संघर्ष है और इस संघर्ष में मनुष्य विजयी होता है यदि वह रणक्षेत्र में तैयारी के साथ उतरता है और अपने रथ पर, अपने घोड़ों की लगाम भगवान रूपी श्रीकृष्ण के हाथों थमा देता वह विजय श्री का वरण करता है।

- आचार्य लोकेन्द्र
दर्शनाचार्य (पतंजलि योगपीठ हरिद्वार)

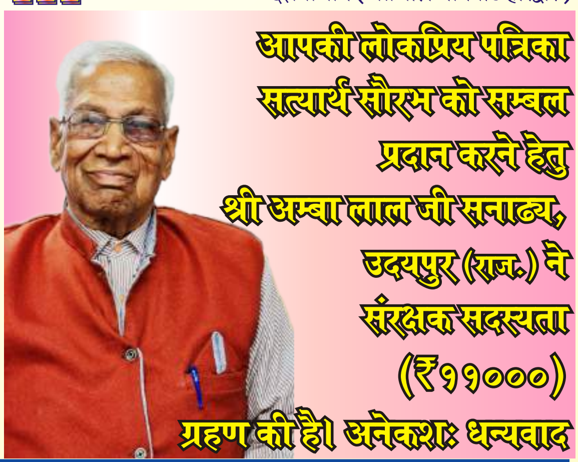

किशोरों में बढ़ती हिंसा

प्रमोद भार्गव

यह सच्चाई कल्पना से परे लगती है कि विद्या के मंदिर में पढ़ाई जा रही किताबें हिंसा की रक्त रंजित इबारत लिखेंगी? लेकिन हैरत में डालने वाली बात है कि यह हृदय विदारक घटना एक हकीकत बन चुकी है। देश के महानगर और शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाने वाले देश अमेरिका के मिशिगन में दसवीं कक्षा के एक १४ वर्षीय नाबालिग छात्र ने तीन छात्रों की शाला परिसर में गोली मारकर हत्या कर दी। छात्र के शिक्षक सहित आठ छात्र गंभीर घायल हैं। आरोपी छात्र ने अपने पिता की सेटमी स्वचालित बंदूक से करीब २० गोलियाँ दागी थीं। अचरज में डालने वाली बात है कि कोरोना के भयावह संकटकाल में अमेरिका में बंदूकों की माँग सात गुना बढ़ी है। इनमें से ६२

प्रतिशत बंदूकें गैर श्वेतों के पास हैं। इस बीच महिलाओं में भी बंदूकें खरीदने की दिलचस्पी बढ़ी है। महिलाएँ पिंक पिस्टल खरीद रही हैं। बंदूकों की इस बढ़ी बिक्री का ही परिणाम है कि २०२१ में ही फायरिंग की ६५० घटनाएँ घट चुकी हैं और दस छात्रों की मौत इस एक साल में हो चुकी है। साफ है, आधुनिक और उच्च शिक्षित माने जाने वाले इस देश में हिंसा की इबारत लिखने का खुला कारोबार चल रहा है। जाहिर है, यहाँ के शिक्षण संस्थानों में किताबों से संस्कार ग्रहण करने वाली शिक्षा हिंसा की इबारत कैसे लिखी जाए, यह पाठ पढ़ा रही है।

विद्यालयों में छात्र हिंसा से जुड़ी ऐसी घटनाएँ पहले अमेरिका जैसे विकसित देशों में ही देखने में आती थी, लेकिन अब भारत जैसे विकासशील देशों में भी क्रूरता का यह सिलसिला चल निकला है। हालांकि भारत का समाज अमेरिकी समाज की तरह आधुनिक नहीं है कि जहाँ पिस्तौल अथवा चाकू जैसे हथियार रखने की छूट छात्रों को हो। अमेरिका में तो ऐसी विकृत संस्कृति पनप चुकी है, जहाँ अकेलेपन के शिकार एवं माँ-बाप के लाड़-प्यार से उपेक्षित बच्चे घर, मोहल्ले और संस्थाओं में जब-तब पिस्तौल चला दिया करते हैं। आज अभिभावकों की अतिरिक्त व्यस्तता और एकांगिकता जहाँ बच्चों के मनोवेगों की पड़ताल करने के लिए दोषी है, वहीं विद्यालय नैतिक और संवेदनशील मूल्य बच्चों में रोपने में सर्वथा चूक रहे हैं। छात्रों पर विज्ञान, गणित और वाणिज्य विषयों की शिक्षा का बेवजह दबाव भी बर्बर मानसिकता विकसित करने के लिए दोषी हैं। आज साहित्य, समाजशास्त्र व मनोविज्ञान की पढ़ाई पाठ्यक्रमों में कम से कमतर होती जा रही है, जबकि साहित्य और समाजशास्त्र ऐसे विषय हैं जो समाज से जुड़े सभी विषयों और पहलुओं का वास्तविक यथार्थ प्रकट कर बालमनों में संवेदनशीलता का स्वाभाविक सृजन करने के साथ सामाजिक विसंगतियों से परिचत कराते हैं। इससे हृदय की जटिलता टूटती है और सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के कोमल भाव भी बालमनों में अंकुरित होते हैं। महान् और अपने-अपने क्षेत्रों में सफल व्यक्तियों की जीवन-गाथाएँ (जीवनियाँ) भी व्यक्ति में संघर्ष के लिए जीवटता प्रदान करती हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे यहाँ ऐसा कोई पाठ्यक्रम पाठशालाओं में नहीं है, जिसमें कामयाब

व्यक्ति की जीवनी पढ़ाई जाती हो? जीवन-गाथाओं में जटिल परिस्थितियों से जूझने एवं उलझनों से मुक्त होने के सरल, कारगर और मनोवैज्ञानिक उपाय भी होते हैं।

भूमण्डलीयकरण के आर्थिक उदारवादी दौर में हम बच्चों को क्यों नहीं पढ़ाते कि संचार तकनीक और ईंधन रसायनों का जाल बिछाए जाने की बुनियाद रखने वाले धीरूभाई अम्बानी

एक कम पढ़े-लिखे एवं साधारण व्यक्ति थे। वे पेट्रोल पंप पर वाहनों में पेट्रोल डालने का मामूली काम करते थे। इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति ने अपने व्यवसाय की शुरूआत मात्र दस हजार रूपए की छोटी-सी रकम से की थी और आज अपनी व्यावसायिक दक्षता के चलते अरबों का कारोबार कर रहे हैं। दुनिया में कम्प्यूटर के सबसे बड़े उद्योगपति बिल गेट्स पढ़ने में औसत दर्जे के छात्र थे? इसी तरह इण्डियन एक्सप्रेस और जनसत्ता के संपादक रहे प्रभाष जोशी मात्र १०वीं तक पढ़े थे। अन्ना हजारे और बाबा रामदेव भी कम पढ़े-लिखे हैं। कामयाब लोगों के शुरूआती संघर्ष को पाठ्यक्रमों में स्थान दिया जाए तो पढ़ाई में औसत हैसियत रखने वाले या कमजोर छात्र भी हीनता-बोध की उन ग्रंथियों से मुक्त रहेंगे जो अवचेतन में क्षोभ, अवसाद और संवेदनहीनता के बीज अनजाने में ही बो देती है और छात्र तनाव व अवसाद के दौर में विवेक खोकर हत्या, आत्महत्या अथवा बलात्कार जैसे गंभीर आपराधिक कारनामे कर डालते हैं। वैसे भी सफल एवं भिन्न पहचान बनाने के लिए व्यक्तित्व में दृढ़ इच्छाशक्ति और कठोर परिश्रम की जरूरत होती है, जिसका पाठ केवल कामयाब लोगों की जीवनियों से ही सीखा जा सकता है।

यूपीए सरकार ने शिक्षा में पर्याप्त सुधार के लिए उत्तम स्तर के छह हजार विद्यालय और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को श्रेष्ठ ज्ञान-विज्ञान से दीक्षित करने हेतु चौदह सौ महाविद्यालय खोले हैं। शिक्षा को व्यवसाय का दर्जा देकर निजी क्षेत्र के हवाले छोड़कर हमने बड़ी भूल की है। ये प्रयास शिक्षा में समानता के लिहाज से बेमानी हैं। क्योंकि ऐसे ही विरोधाभासी व एकांगी प्रयासों से समाज में आर्थिक विषमता बढ़ी है। यदि ऐसे प्रयासों को और बढ़ावा दिया गया तो विषमता की यह खाई और बढ़ेगी? जबकि इस खाई को पाटने की जरूरत है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो शिक्षा केवल धन से हासिल करने का हथियार रह जाएगी। जिसके परिणाम कालान्तर में और भी घातक व विस्फोटक होंगे। समाज में सवर्ण, पिछड़े, आदिवासी व दलितों के बीच आर्थिक व सामाजिक मतभेद बढ़ेंगे जो वर्ग संघर्ष के हालातों को आक्रामक व हिंसक बनाएँगे। यदि शिक्षा के समान अवसर बिना किसी जातीय, वर्गीय व आर्थिक भेद के सर्वसुलभ होते हैं तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना, संवेदनशीलता और पारस्परिक सहयोग व समर्पण वाले सहअस्तित्व का बोध पनपेगा, जो सामाजिक न्याय और सामाजिक संरचना को स्थिर बनाए रखने का कारक बनेगा।

वैसे मनोवैज्ञानिकों की मानें तो आमतौर से बच्चे आक्रामकता और हिंसा से दूर रहने की कोशिश करते हैं। लेकिन घरों में छोटे पर्दे और मुट्ठी में बंद मोबाइल पर परोसी जा रही हिंसा और सनसनी फैलाने वाले कार्यक्रम इतने असरकारी साबित हो रहे हैं कि हिंसा का उत्तेजक वातावरण घर-आंगन में विकृत रूप लेने लगा है, जो बालमनों में संवेदनहीनता का बीजारोपण कर रहा है। मासूम और बौने

से लगने वाले कार्टून चरित्र भी पर्दे पर बंदूक थामे दिखाई देते हैं, जो बच्चों में आक्रोश पैदा करने का काम करते हैं। कुछ समय पहले दो किशोर मित्रों ने अपने तीसरे मित्र की हत्या केवल इसलिए कर दी थी कि वह उन्हें वीडियो गेम खेलने के लिए तीन सौ रुपए नहीं दे रहा था। लिहाजा छोटे पर्दे पर लगातार दिखाई जा रही हिंसक वारदातों के महिमामंडन पर अंकुश लगाया जाना जरूरी है। यदि बच्चों

के खिलौनों का समाजशास्त्र एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाए तो हम पाएंगे की हथियार और हिंसा का बचपन में अनाधिकृत प्रवेश हो चुका है।

सबसे ज्यादा नकारात्मक बात है कि हमने न तो पारम्परिक

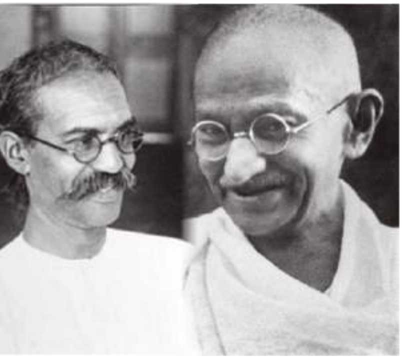

ज्ञान-विज्ञान को उपयोगी माना और न ही शिक्षा के सिलसिले में महात्मा गाँधी व गिजुभाई बधेका जैसे शिक्षाशास्त्रियों के मूल्यों को तरजीह दी। शिक्षा आयोगों की नसीहतों को भी आज तक अमल में नहीं लाया गया। अभी भी यदि हम वैश्विक संस्कृति और अंग्रेजी शिक्षा के मोह से उन्मुक्त नहीं होते तो शिक्षा परिसरों में हिंसा, हत्या, आत्महत्या और बलात्कार जैसी घटनाओं में और इजाफा होगा? इनसे निजात पाना है तो जरूरी है कि तनावपूर्ण स्थितियों में सामंजस्य बिठाने, महत्वाकांक्षा को तुष्ट करने और चुनौतियों से सामना करने के कौशल को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए और गाँधी व गिजुभाई के सिद्धान्तों को शिक्षा का मानक माना जाए। गुरुजन भी अकादमिक उपलब्धियों के साथ बाल मनोविज्ञान का पाठ पढ़ें? इसे भक्त कवि सूरदास की कृष्ण की बाल लीलाओं से भी सीखा जा सकता है। जिससे शिक्षक बालकों के चेहरे पर उभरने वाले भावों से अन्तर्मन खंगालने में दक्ष हो सकें? और समस्या के तात्कालिक समाधान के लिए कोई सार्थक पहल कर सकें? हालांकि नई शिक्षा नीति में ऐसे कुछ उपाय किए गए हैं, जो कालान्तर में परिणाममूलक साबित होंगे।

(लेखक प्रिन्ट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार है।)

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री भँवर लाल जी आर्य, उदयपुर (राज.) ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- ☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- ☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- ☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- ☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- ☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- ☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- ☞ वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- ☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- ☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- ☞ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

समय का सदुपयोग करो

समय की शक्ति अद्‌भुत और महान्‌ है। आंग्ल भाषा में एक कहावत है Time is Money अर्थात्‌ समय धन है। युवको! आपके जीवन में एक एक क्षण में कुबेर की सम्पत्ति छिपी है। अतः समय का उपयोग बड़ी सावधानी से करो।

गया हुआ धन, खोया हुआ स्वास्थ्य, भूली हुई विद्या, छीना हुआ साम्राज्य फिर आ सकता है परन्तु गया हुआ समय कदापि नहीं लौट सकता। इसी तथ्य को दर्शाने के लिए एक चित्रकार ने समय का कॉर्टून बनाया। कॉर्टून में चित्रकार ने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र बनाया था जिसका चेहरा आगे की ओर तो बालों से ढका था और पीछे की और गंजा था। उसके पैरों में पंखे लगे हुए थे। लोगों ने पूछा यह किसका चित्र है। चित्रकार ने कहा समय का। इसका मुँह क्यों ढका हुआ है। लोगों ने पुनः प्रश्न किया। क्योंकि जब वह मनुष्य सामने आता है तो वे इसे पहचान नहीं सकते। यह पीछे से गंजा क्यों है इसलिए कि समय के आते ही उसके बाल सामने से पकड़ ले। यदि चूके तो फिर करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी एक क्षण की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। इसके पैरों में पंख क्यों हैं इसलिए कि यह बहुत शीघ्र चला जाता है और जब चला जाता है तो फिर उसको देवता भी नहीं पकड़ सकते।

कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि अभी जल्दी क्या है कर लेंगे। परन्तु यह भयंकर भूल है। यदि उठती हुई जवानी में कुछ नहीं किया तो आगे क्या हो सकेगा। अभी से इसी क्षण से अपने समय का सदुपयोग आरम्भ कर दीजिए। देखिए तो सही एक कवि आपको कैसी सुन्दर चेतावनी दे रहा है।

खेल ही में बाल जो दिन काटता है वह है बुरा,
शोक अपने हाथ वह है मारता उर में छुरा।
बलपन से लाभ पहुँचाना उचित है जो,
क्या प्रकट करता नहीं बालेन्दु निज आलोक को।
जीवन बड़ा ही अल्प है और कार्य महान्‌ है।।

अतःआज के कार्य को कल पर मत छोड़ो।

वेद कहता है- **कालो अश्व वहति।** - अथर्व १६/५३/१

अर्थात्‌ समय रूपी घोड़ा भागा जा रहा है। अपने समय को व्यर्थ न जाने दीजिए। तनिक सी देर होने से गाड़ी छूट सकती है। जरा सी देर होने से आप परीक्षा में सम्मिलित होने से रह सकते हैं। थोड़ी सी देर होने से साम्राज्य नष्ट हो सकते हैं। भविष्य की आशाओ! यदि तुम मूर्खों की भाँति अपने समय को व्यर्थ खोते रहोगे, अपने जीवन के अमूल्य क्षण, आलस्य, प्रमाद, गपशप और तुच्छ मनोरंजन में खोते रहोगे तो स्मरण रखो, तुम्हारी गिनती कभी भी महापुरुषों में न हो सकेगी और तुम कठिनाइयों में पड़कर दर-दर की ठोकरें खाते रहोगे। नेपोलियन के आदर्श को अपने सामने रखिए। वह अपनी घड़ी का अध्ययन उसी प्रकार किया करता था जिस प्रकार युद्ध के नक्शे का। सेना की तो बात ही क्या, वह अपने सेनानायकों का बड़ा निरीक्षण किया करता था। एक बार उसका मंत्री १० मिनट देर से आया। नेपोलियन ने घड़ी दिखाकर कहा- 'Either you change your watch or I shall change you. अर्थात्‌ यो तो तुम अपनी घड़ी

बदल लो नहीं तो मैं तुम्हें बदल दूँगा।'

प्रिय युवको! आप अपनी कलाई पर घड़ी बाँधते हैं, परन्तु शोभा के अतिरिक्त क्या आप उसका वास्तविक उपयोग लेते

हैं? टिक-टिक करती हुई घड़ी आपको सन्देश दे रही है, आपको सचेत कर रही है कि उद्यम और पुरुषार्थ ही जीवन है, निरन्तर कार्य में लगे रहो, एक क्षण को भी व्यर्थ मत जाने दो! परन्तु क्या आप उसकी प्रेरणा को सुनते हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं। आपकी कलाई में घड़ी होते हुए भी आप स्कूल और कॉलेज में देर से पहुँचते हैं। सभा और समाजों में ठीक समय पर नहीं जा पाते। क्या आपके पढ़ने-लिखने, खाने-पीने, सोने-जागने का कोई समय निश्चित है? यदि नहीं तो आपका घड़ी बाँधना व्यर्थ है। घड़ी को अंग्रेजी में वॉच कहते हैं इसका प्रत्येक अक्षर एक दिव्य सन्देश दे रहा है। वे सन्देश निम्न हैं-

१. Watch your word. अपने वचनों को, दूसरे के साथ की हुई प्रतिज्ञाओं की ओर ध्यान दीजिए। आप दूसरों के साथ जो प्रतिज्ञा करते हैं उसका पालन कीजिए।
२. Watch your action. अपने कार्यों पर दृष्टि डालिए। क्या आप अपने कर्तव्यों को निभा रहे हैं? इस पर विचार किजिए।
३. Watch your thoughts. अपने विचारों पर नियंत्रण रखिए। अपने विचारों को शुद्ध और पवित्र बनाइये। दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखिए।
४. Watch your character . प्रतिदिन अपने चरित्र का अवलोकन कीजिए और अपने चरित्र को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न कीजिए।
५. Watch your heart . अपने हृदय में झाँकिए। देखिए कि आपके हृदय में क्षुद्रता और संकीर्णता तो नहीं है? अपने हृदय को विशाल बनाइये।

यदि आपके जीवन में उपर्युक्त गुण नहीं हैं तो आपका घड़ी ही बाँधना व्यर्थ है। समय के मूल्य को समझिए उसके एक एक क्षण का सदुपयोग कीजिए। अभी से लंगर लंगोटे कस लीजिए और अपने जीवन निर्माण की योजना आरम्भ कर दीजिए।

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	श १		२	२ ध	२		३	३ मि	३
४	४ न	४	नि ४		५	५	५ भा	५	
६ प्रा	६	६	६ क		७	७	७ नि	७	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. वाममार्गियों में कितनी महाविद्या प्रसिद्ध हैं?
२. जिस समय शंकराचार्य उज्जैन नगरी में आये उस समय वहाँ का राजा कौन था?
३. उपन्यास ऐश्वर्य प्राप्ति पर्यन्त हेतुओं से, ब्रह्म स्वरूप से जीव स्थित होता है, ऐसा किस आचार्य का मत है?
४. शंकराचार्य को विष किसके द्वारा दिया गया था?
५. अन्तःकरणों में ब्रह्म के आभास को क्या कहते हैं?
६. जो सर्वदा सत्य माने, सत्य बोले, सत्य करे, झूठ न माने, झूठ न बोले और झूठ कदाचित् न करे वह क्या कहाता है?
७. 'गुहां प्रविष्टौ सुकृतस्य लोके' यह किसका वचन है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०२२

ईश्वर को जहाँ देखना चाहिए वहाँ नहीं देखते

एक सेठ थे। उनके पास बहुत कीमती हीरा था। उसे वह बेचना चाहते थे। अच्छी कीमत मिल सके इसलिए उसने सोचा यदि किसी बड़े शहर में जाकर इस हीरे को बेचूँगा तो ठीक कीमत आ जावेगी और वहाँ कोई निश्चित रूप से हीरा खरीद ही लेगा। इस विचार से वह एक बड़े शहर में चला गया। कई दुकानों पर जाकर बताया परन्तु हीरे के ठीक दाम नहीं मिल रहे थे। इस प्रयास में कई दिन बीत गए परन्तु हीरे का उचित दाम देने वाला कोई खरीददार नहीं मिला।

सेठ की इस स्थिति को एक ठग देख रहा था। उसके मन में विचार आया कि यदि मैं इस सेठ से किसी प्रकार यह हीरा प्राप्त कर लूँ तो जीवन ठीक-ठाक बीत जावे और गरीबी दूर

हो जावे। इस विचार से ठग ने सेठजी से सम्पर्क कर कहा- सेठजी! मैं यहाँ कई बड़े-बड़े व्यापारियों को जानता हूँ हीरा बिकवाने में मैं मदद करूँगा, आप मेरा सहयोग लीजिए, बदले में मेरा मेहनताना दे देना, ऐसा प्रस्ताव रखा। सेठजी ने ठग की बात मानी और उससे सहयोग लेने लगे। ठग दिनभर सेठजी के साथ रहता, कई दुकानों पर इन्हें ले जाता और रात्रि में सेठजी के साथ ही उसी कमरे में रुक जाता, जहाँ सेठजी सोते थे। यह क्रम काफी दिन चला परन्तु सेठजी को हीरे का उचित दाम नहीं मिल रहा था। अन्त में सेठ जी ने अपने घर लौटने का निर्णय लिया और उस ठग को, जो सेवक के रूप में सहयोग कर रहा था, कुछ पैसा देना चाहा। ठग तो सेठजी के जाने से उदास था क्योंकि हीरा तो वह ले नहीं पाया। उसको अपना भारी नुकसान लग रहा था। उसने सेठजी से कहा मुझे कोई पैसा नहीं चाहिए पर आप मुझे एक बात बता दो कि रात में आप हीरा कहाँ रखते थे? मैं रात भर उसे ढूँढता रहता, रात-रात भर जागा, पर हीरा कहीं नहीं मिला, जबकि छोटा सा तो कमरा था। इस बात का मुझे आश्चर्य हो रहा है।

सेठजी ने उसे बताया, अरे, बावले! देख, रात्रि में तू और मैं जब सोने जाते थे उसके पहले मैं अपना कुर्ता निकालकर इस खूँटी पर टांग देता था और तू अपनी कमीज उस पर टांग देता था। जब तू कमीज टांग देता, उसके बाद मैं तुझसे पीने के लिए पानी माँगता या किसी काम से बाहर भेज देता था। सेठजी ने कहा, बस, जब तू पानी लेने जाता था उस समय मैं हीरा तेरी कमीज की जेब में डाल देता। तू रातभर मेरा कभी कुर्ता टटोलता, कभी बिस्तर, कभी पेटी में देखता, पर कभी तूने अपनी जेब नहीं देखी। ठग मन ही मन अपने को कोसने लगा, हाय रे मेरी बदकिस्मती, सब जगह देखता रहा, पर अपनी ही जेब नहीं ढूँढ़ी, जिसमें हीरा था।

आज हमारी भी ठीक यही स्थिति है। ईश्वर के रहने का स्थान तो मन-मन्दिर है, परन्तु वहाँ तलाश किया नहीं और ढूँढ़ते फिरे सारे जमाने में।

दूसरा यह कि तामसी श्रद्धा से अर्थात् सत्यज्ञान को जाने बिना भीड़, परम्परा, गुरुड़म, भाग्य, पण्डे-पुजारियों के चक्कर में जहाँ कुछ नहीं वहाँ भी ईश्वर की मान्यता मानकर थोथी मान्यताओं से बँधे हैं, जैसे- हम परमात्मा और धर्म के

नाम पर बस रात-दिन कुछ करते जा रहे हैं, ईश्वर दर्शन के लिए भटक रहे हैं। पर यह ज्ञान नहीं कि वह ईश्वर कैसा है, कहाँ है, मिल भी जायेगा या नहीं। उसको ढूँढ़ने का परिणाम क्या होगा, नहीं मिला तो इसमें क्या हानि होगी, ऐसा कभी विचार नहीं करते और मोह-माया के वशीभूत बस कर्म करते जा रहे हैं ऐसे कर्म को तामसी कर्म कहते हैं, इसकी व्याख्या योगीराज श्रीकृष्ण जी ने सन्देश देते हुए इस प्रकार की है-

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते।। - गीता १८/२५

अर्थात् जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को न देखकर मोहपूर्वक आरम्भ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है।

एक ऊँटों का व्यापारी कुछ ऊँटों को लेकर बेचने हेतु दूसरे प्रदेश की ओर निकल पड़ा। रास्ते में रात्रि हो गई। उसने किसी स्थान पर रुकने का विचार किया और धर्मशाला के सराय के मालिक से मिला। धर्मशाला के सामने काफी बड़ा मैदान था उसने विचार किया कि ऊँट बाहर मैदान में बाँध दूँगा और मैं कमरे में सो जाऊँगा।

व्यापारी ने सराय के मालिक से रात में ठहरने की अनुमति ली और ऊँट बान्धने लगा। किन्तु एक ऊँट बान्धने का साधन उसके पास नहीं था, एक कील और रस्सी उसके पास कम थी। उसनें सोचा यदि ऊँट को बाँधा नहीं तो कहीं चला जायेगा और नुकसान हो जावेगा इस कारण वह ऊँटों की रखवाली के लिए सराय के बाहर ओटले पर आकर बैठ गया। रात्रि में सराय का मालिक किसी कार्य से उठा तो उनसे देखा आधी रात के बाद भी व्यापारी बाहर बैठा है। उसने इस प्रकार बैठने का कारण पूछा तो व्यापरी ने बताया एक कीला और रस्सी कम होने से एक ऊँट को न बाँधने का कारण बताया।

सराय के मालिक ने कहा- अरे भाई! इस ऊँट को भी बाँध दे। व्यापारी ने पूछा कैसे? सराय का मालिक बोला- जैसे तूने दूसरे ऊँटों को बाँधा है, वैसे मात्र इसके सामने थोड़ा अभिनय कर दे, बस फिर सो जा।

व्यापारी उठा उसने अपने लोहे का बड़ा सा घन (हथौड़ा) उठाया और ऊँट के सामने जाकर जमीन पर मारने लगा, जैसे वह कीला गाड़ रहा है। फिर उसने ऊँट के पैर को पकड़ा उसके आस-पास हाथ घुमाया मानों जैसे पैर में रस्सी बाँध रहा है, फिर जमीन पर जहाँ उसने हथोड़े की चोट लगाई थी वहाँ आसपास हाथ घुमाया मानो कीले में रस्सी बान्ध रहा है। इतना करने के बाद जाकर सो गया। सुबह उठकर देखा, आश्चर्य है ऊँट वहीं खड़ा है जहाँ उसे रात्रि में खड़ा किया था।

व्यापारी को आगे जाना था, उसने सारे ऊँटों को जिन्हें बाँधा था खोल दिया और चल दिया किन्तु एक ऊँट जिससे बाँधने का अभिनय किया था, वास्तव में जिसे बाँधा नहीं था, उसे नहीं खोला, उसे खोलने का प्रश्न ही नहीं था, परन्तु वह अपनी जगह ही खड़ा था। सराय का मालिक देख रहा था उसने व्यापारी से कहा- अरे भाई उसे भी खोल, तभी वह आगे बढ़ेगा। व्यापारी ने कहा इसे मैंने बाँधा ही कब था, जो इसे खोलूँ। सराय मालिक ने कहा जैसा अभिनय करके तूने इसे बाँधा था वैसा ही अभिनय करके इसे खोल। व्यापारी ने वैसा ही किया, इसके बाद ऊँट तुरन्त दूसरे ऊँटों की ओर चल पड़ा।

देखिए, ऊँट मात्र भ्रम से बँधा था, न रस्सी थी न कीला परन्तु अन्धश्रद्धा, काल्पनिक मान्यता ने उसे बाँध दिया था। हमारी स्थिति भी तामसी श्रद्धा के समान ही है, ईश्वर के सम्बन्ध में भी जाने कैसी-कैसी काल्पनिक मान्यताओं से बँधे हुए हैं। आज समाज के सामने हजारों ऐसी ही मान्यताएँ हैं जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं किन्तु फिर भी कोरी कल्पनाओं में बँधे हैं। हमने कभी उन पर विचार करके सोचा ही नहीं।

एक शायर ने लिखा है-

मैं और मेरा यार एक ही गली में रहते हैं।
पर फिर भी मिलने को तरसते हैं।।

एक उर्दू के शायर ने लिखा है-

ढूँढता किस वास्ते गाफिल, यू घर-घर देखता,
पहले ही गर जैसे बगल दिलवर अपना देखता।
साफ कर देता सीने के आईने का जंग अगर,
तो लाखों पर्दों से वो पर्दानशीं आता नजर।।

आर्य जगत् के बड़े प्रसिद्ध भजनोपदेशक कविरत्न प्रकाश जी ने बड़ी सुन्दर व सार्थक पंक्तियाँ लिखीं हैं-

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है,
अचरज है जल में रहकर, मछली को प्यास है।
फूलों में ज्यूं सुवास, ईख में मिठास है,
परमात्मा का विश्व के, कण-कण में वास है।
टुक ज्ञानचक्षु खोलकर, तू देख तो सही,
जिसको तू ढूँढ़ता था, सदा तेरे पास है।।

ईश्वर को सर्वव्यापक, सब जगह, सब दिशाओं में मानना ही उसके वास्तविक स्वरूप के अनुरूप मानना होगा। वह असीम है, जिसकी कोई सीमा नहीं है, किन्तु यदि ऐसा नहीं

मानते हैं तो उसको हम सीमित कर रहे हैं। उसकी शक्ति का व उसका आकलन हमने गलत किया है। एक उर्दू के शायर ने बहुत खूब लिखा है-

गंगा में भी हर है, आबे जम-जम में भी हर है,
पूरब में भी, पश्चिम में भी, महबूब का घर है।
तू बहम में पड़ा है, कि इधर है उधर है,
पर हर सिन्त से नाजिर की तुझ पर नजर है।।

वह हर अर्थात् ईश्वर भारत की गंगा हो या पाकिस्तान का आबे जमजम, पूरब हो या पश्चिम, सभी में परमात्मा का

निवास है। वहम में व्यर्थ पड़े हैं कि वो इधर है या उधर है किन्तु हर दिशा से उसकी हम पर निगाह हैं।

आज के समाज की स्थिति क्या है? कृपया इस स्वरचित रचना को देखें-

गंवादी उमर पूरी तुझे पाने में,
ढूँढ़ता फिरा, सारे जमाने में।
जाने कितने उपवास, व्रत कर डाले,
घूमे जाने कितने मंदिर और शिवाले।
तीरथ स्नान जिन्दगी भर करता रहा,
शरीर को तपा धूप, सर्दी सहता रहा।
नाम से तेरे लुटता रहा, धर्म के ठेकेदारों से,
चढ़ावा, चढ़ाता रहा, वहाँ हजारों में।
पर तू तो दाता है, सब भण्डार तू,
देवता तू और पालन हार तू।
ये बस बाहर की आँखों ने करवाया,
ज्ञान चक्षु का, ख्याल ही नहीं आया।
ढूँढ़ना था जहाँ बस वहीं ढूँढ़ा नहीं तुझे,
भटका दिया, उलझा दिया जमाने ने मुझे।
पहले ही अगर मन-मन्दिर में तुझे देखा होता,
तो तेरे नाम पर नहीं होता ये धोखा।
देखा जब अन्दर की आँखें खोल,
तो तुझे हर दम वहाँ पाया।
तू इतना करीब था कि प्रकाश,
तुझे समझ ही नहीं पाया।।

अधिक दूर की कोई वस्तु दिखाई नहीं देती है, और अति निकट की भी दिखाई नहीं देती, या आँखों के विकार या वस्तु की सही जानकारी न होने पर पास रहते भी, दूर होती है। ठीक वैसे ही वह परमात्मा इतना निकट है कि हम अधिक निकटता के कारण उसे देख ही नहीं पाते हैं। जहाँ हमारा (जीवात्मा) स्थान है वहीं उस परमात्मा का भी। इतना ही नहीं वही हमारी आत्मा में समाया हुआ है। वेद जो पूर्ण प्रामाणिक, सत्य और ईश्वर की पवित्र वाणी है उसमें लिखे उपदेश को न मानना हमारी सबसे बड़ी भूल है। कहा गया है-

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। -अथर्व १०/८/३२

परमात्मा हमारे इतना निकट है कि हम उसे देख नहीं पाते हैं, जो इतना निकट है, उसे छोड़ भी नहीं सकते। अतः परमेश्वर को देखना है और उसे छोड़ना नहीं चाहते तो परमेश्वर की उस कृति को देखो, काव्यरूपी वेद को देखो, वह कभी जीर्ण नहीं होता, न कभी मरता है।

लेखक- श्री प्रकाश आर्य
महू (मध्यप्रदेश), मोबाइल- ९८२६६५५११७

भूल सुधार- सत्यार्थ सौरभ के माह दिसम्बर अंक में शोक समाचारान्तर्गत श्री इन्द्रदेव पीयूष की धर्मपत्नी का नाम भूलवश कौशल्या देवी के स्थान पर लक्ष्मी देवी छप गया था। जिसके लिए हम हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं। कृपया लक्ष्मी देवी के स्थान पर कौशल्या देवी पढ़ें। - सम्पादक

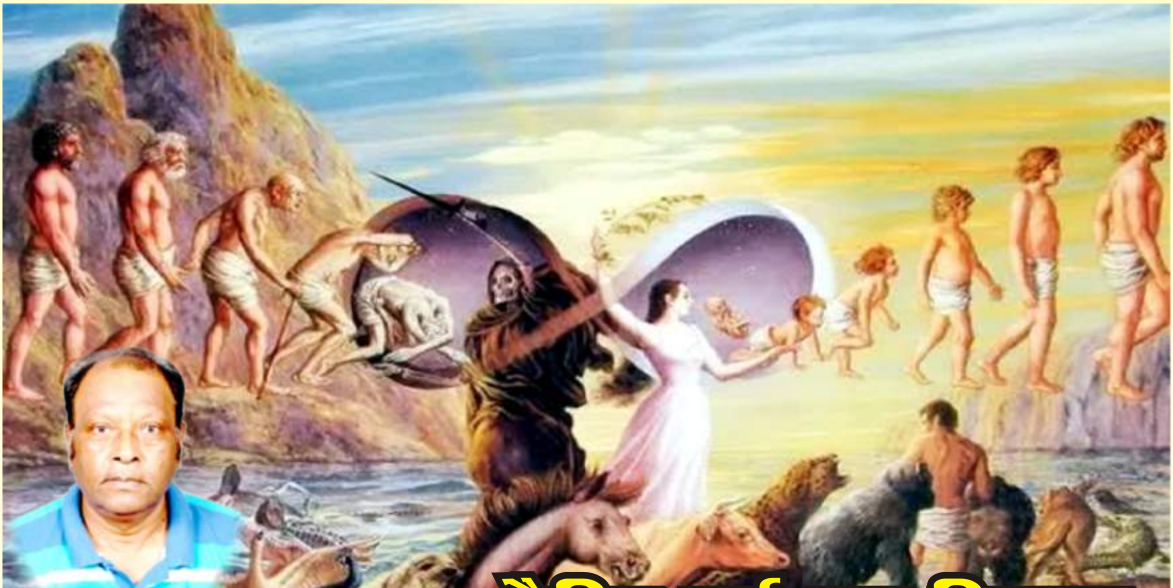

वैदिक कर्म-फल सिद्धान्त "सत्य नियमों पर आधारित यथार्थ दर्शन है"

वैदिक धर्म सृष्टि का सबसे पुराना धर्म है। यह धर्म न केवल इस सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित हुआ है अपितु इससे पूर्व जितनी बार भी प्रलय व सृष्टि हुई हैं, उन सब सृष्टि कालों में भी एकमात्र वैदिक धर्म ही पूरे विश्व में प्रवर्तित रहा है। इसका कारण यह है कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीन अनादि सत्तायें हैं। ईश्वर अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा। उसका कभी नाश व अभाव नहीं होगा। इस कारण से वह अनादि काल से असंख्य बार उत्पन्न अनन्त सृष्टियों में उपस्थित रहा है। वेद उसका अपना निज ज्ञान है। परमात्मा का वेदज्ञान पूर्ण ज्ञान है जिसमें न्यूनाधिक नहीं होता है। जो वेदज्ञान ईश्वर ने इस सृष्टि के आदिकाल में दिया था वही ज्ञान अनादिकाल से प्रत्येक सृष्टि की आदि में वह देता आ रहा है और भविष्य में भी देगा। इस वैदिक धर्म की एक विशेषता इसका कर्म-फल सिद्धान्त है। वस्तुतः इस सृष्टि की उत्पत्ति का कारण व प्रयोजन ही अनादि व नित्य अल्पज्ञ जीवों को उनके पूर्वजन्मों व सृष्टियों में किये हुए कर्मों के सुख व दुःख रूपी फल देना है। यदि ऐसा न हो तो फिर ईश्वर के द्वारा सृष्टि की रचना का कोई प्रयोजन व कारण नहीं रहता है।

संसार में भी हम इसी तरह की व्यवस्था को देखते हैं। माता-पिता व आचार्य अपनी सन्तानों व शिष्यों को उनके कर्मानुसार पसन्द व नापसन्द करते हैं। वह सब अच्छे कार्यों के लिये प्रशंसा करते, उनको आशीर्वाद व भौतिक सम्पत्ति देते और अशुभ व पापकर्म करने पर उनकी ताड़ना करते व दण्डित करते हैं। सरकारी व्यवस्था में दुष्कर्म करने वाले को अपराधी कहा जाता है और उसे कारावास आदि की यातनायें दी जाती हैं। यह कर्मफल व्यवस्था सभी पर लागू होती है। सभी जीवात्मायें चाहें वह मनुष्य योनि में हों या इतर पशु, पक्षी व अन्य योनियों में, वह सब परमात्मा की सन्तानें हैं। परमात्मा भी अच्छे कर्म करने वालों को सुख तथा अशुभ व दुष्कर्म करने वालों को दुःख देता है। जो जीवात्मा मनुष्य योनि में जन्म लेकर वेदज्ञान प्राप्त कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर वेदानुसार जीवन व्यतीत करता है, अशुभ, पाप वा दुष्कर्मों को नहीं करता, परमात्मा उसको दुःखों से छुड़ाकर मोक्ष व मुक्ति प्रदान करता है। इसीलिये सृष्टि के आरम्भ से सभी वेदज्ञानी, साधु, ऋषि-मुनि व विद्वान् सत्कर्मों को करते आये हैं व सत्कर्मों को प्रवृत्त करने के लिये वेद-प्रचार भी करते रहे हैं। ऋषि दयानन्द भी वैदिक परम्परा के ऋषि थे। उन्होंने भी अपने जीवन काल वर्ष १८२५-१८८३ में वेदज्ञान अर्जित कर वेदों के प्रचार-प्रसार में ही अपने जीवन को समर्पित किया था जिसके परिणामस्वरूप देश अज्ञान व अन्धविश्वासों से बाहर आया और देश की आजादी सहित शिक्षा जगत् व अन्य सभी क्षेत्रों में देश ने प्रगति की है। ईश्वर सर्वज्ञ वा पूर्णज्ञानी है। वह अनादि व नित्य होने सहित

सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं न्यायकारी है। अतः परमात्मा जीवों को सुख देने के लिये उनको सद्कर्म करने की प्रेरणा उनकी आत्माओं के भीतर करता रहता है। जो मनुष्य ईश्वर की प्रेरणा के विपरीत आचरण करते हैं वह उसकी न्याय व्यवस्था से दण्डित होते वा दुःख प्राप्त करते हैं और जो उसकी व्यवस्था का पालन करते हैं वे सुख व उन्नति रूपी पुरस्कार से अलंकृत व पुरस्कृत होते हैं।

कर्म-फल व्यवस्था विषयक वैदिक मान्यताओं के अनुरूप एक मान्यता व सिद्धान्त प्रसिद्ध है। यह है **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं'** इसका अर्थ है कि मनुष्य जो भी शुभ और अशुभ अर्थात् पुण्य व पाप कर्म करता है, उस प्रत्येक कर्म का फल उस जीवात्मा को अवश्य ही भोगना पड़ता है। इसकी पुष्टि अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों व वचनों से होती है। कर्मफल सिद्धान्त के विषय में यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सभी जीवों के प्रत्येक कर्म का साक्षी वा द्रष्टा होता है। जीवात्मा का कोई कर्म ईश्वर की दृष्टि वा ज्ञान से छिपता व छूटता नहीं है। वह मनुष्य व सभी जीवात्माओं के मन के विचारों व भावनाओं को भी जानता है। ईश्वर का एक नाम व कार्य उसका न्यायकारी होना है। न्याय का अर्थ यही है कि प्रत्येक कर्म का उसके अनुरूप, न कम और न अधिक, सुख व दुःख रूपी फल समय पर, न देर और न शीघ्र प्राप्त हो। ईश्वर यह काम बखूबी व बहुत अच्छी तरह से करता है। संसार पर दृष्टि डालें तो ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था के अनेक उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में एक वेदानुकूल एवं यथार्थ बात कही है। उनके अनुसार मनुष्य जब किसी विषय का विचार करता है तो उसकी आत्मा में शुभ व परोपकार आदि के काम करने के प्रति उत्साह एवं आनन्द की अनुभूति होती है और जब किसी के अहित व अपकार का विचार करता है, चोरी व जारी आदि कर्म की योजना बनाता है तो उसकी आत्मा में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती है। यह प्रेरणा व सुख-दुःख आदि की अनुभूति आत्मा की अपनी ओर से न होकर परमात्मा की ओर से होती है। जो मनुष्य परमात्मा की प्रेरणा भय, शंका व लज्जा को अनुभव कर उन कार्यों को नहीं करते वह उनके फल व परिणाम दुःखों से बच जाते हैं। जो करते हैं उनको ईश्वरीय व्यवस्था से दण्ड मिलता है।

संसार में हम प्रतिदिन मनुष्य का जन्म होते देखते हैं। एक बच्चा समृद्ध व धनी परिवार में जन्म लेता है जहाँ उसको

सुख-सुविधा की सभी वस्तुयें सुलभ होती हैं। ऐसे भी बच्चे होते हैं जहाँ माता-पिता व परिवार अभावों व भुखमरी से ग्रस्त होता है। बच्चे को माँ का दुग्ध तक सुलभ नहीं होता। यह अन्तर व भेदभाव कुछ सीमा तक जन्म लेने वाले बच्चों के पूर्वजन्म के कर्मों के कारण होता है। बच्चा कन्या हो या बालक, विद्वान् माता-पिता के यहाँ उत्पन्न हो या अज्ञानी माता-पिता के यहाँ, उसके भावी माता-पिता धनी हों या निर्धन, बच्चा स्वस्थ हो अथवा नहीं, इनमें से बहुत सी बातें जीवात्मा के पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार होती हैं। योगदर्शन में ऋषि पतंजलि द्वारा बताया गया है कि मृत्यु के समय जीवात्मा का जो अभुक्त कर्म संचय वा प्रारब्ध होता है उसके अनुसार ही परमात्मा उस जीवात्मा की जाति, आयु तथा भोग का निर्धारण करता है। जाति मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि योनियों को कहते हैं। मनुष्यों में जो जाति प्रथा प्रचलित है वह यथार्थ में जाति प्रथा नहीं है। यहाँ जाति शब्द का अपप्रयोग है। वस्तुतः सम्पूर्ण मनुष्य जाति एक जाति है। क्या भारत, अमेरिका, इंग्लैण्ड और चीन, सभी देशों के व्यक्ति व बच्चे परमात्मा के द्वारा उत्पन्न नहीं हैं? विचार करने पर ज्ञात होता है कि सब देशों के लोगों व प्राणियों में एक-एक जीवात्मा है और सभी मनुष्यों की जाति एक मनुष्य जाति ही है तथा इतर प्राणियों की भिन्न-भिन्न। भौगोलिक कारणों से लोगों की मुखाकृति व वर्ण आदि में कुछ भेद हो सकता है। प्रारब्ध को मनुष्य के पूर्वजन्मों के कर्मों का बही खाता कह सकते हैं जिसका ज्ञान केवल परमात्मा को होता है। जीवात्मा के प्रारब्ध के अनुसार ही उसकी भावी परजन्म में आयु निर्धारित होती है। जन्म लेने के बाद हम शुभ व अशुभ कर्मों को करके आयु को कम अथवा अधिक भी कर सकते हैं। इसका कारण जीव का कर्म करने में स्वतन्त्र होना है। इस स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करने से आयु कम तथा

इसका सदुपयोग करने से आयु प्रारब्ध के अनुरूप व उससे कुछ अधिक भी हो सकती है।

परमात्मा हमारे प्रत्येक कर्म का फल हमें इस जन्म व परजन्मों में देता है। यदि हम परजन्मों में दुःख नहीं चाहते, इस जन्म के समान व इससे भी अधिक सुखी व समृद्ध मनुष्य का जन्म चाहते हैं तो हमें वेद निषिद्ध असद्कर्मों का

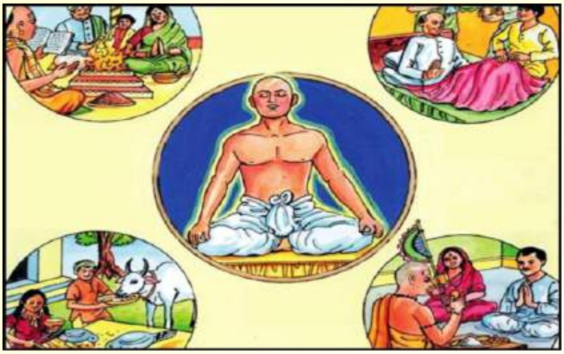

त्याग करना होगा। हमें वेदाध्ययन व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपना ज्ञान बढ़ाना होगा। पंचमहायज्ञ- सन्ध्या, अग्निहोत्र, पितृ, अतिथि तथा बलिवैश्व देवयज्ञों को करना होगा और इसके साथ ही यौगिक जीवन व्यतीत करते हुए तथा सत्पथ पर चलते हुए योग व सन्ध्या के द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करना होगा। ऐसा होने पर ही हमारे दुःखों की पूर्णतः निवृत्ति हो सकती है। सबको अपने भोजन पर भी ध्यान देना चाहिये। हमें पुरुषार्थ से प्राप्त शुद्ध व पवित्र भोजन ही करना है। किसी प्राणी को अनावश्यक कष्ट नहीं देना है। यदि हमारे निमित्त से किसी अन्य मनुष्य द्वारा किन्हीं प्राणियों को कष्ट दिया जाता है तो उसमें हम भी पाप के भागीदार होते हैं और हमें भी अपनी भूमिका के अनुसार फल भोगना होता है। अतः सभी मनुष्यों को मांसाहार, अण्डों का सेवन तथा तामसिक भोजनों का त्याग कर देना चाहिये। मुनष्य का भोजन अन्न, वनस्पतियाँ, फल तथा गोदुग्ध व इससे बने पदार्थ आदि ही हैं। भावी समय में कहीं ऐसा न हो कि हमें रोग, दुर्घटनाओं तथा आपदाओं आदि कष्टों को झेलना पड़े। जो सद्कर्म हमारे वश में हैं, उन्हें शास्त्र की आज्ञा के अनुसार करने का हमें प्रयत्न करना है। इसी से हमारा वर्त्तमान व भावी जीवन सुखद होगा। हमने इस लेख में वैदिक कर्मफल व्यवस्था की संक्षेप में चर्चा की है। इस चर्चा को यहीं विराम देते हैं। इसके साथ ही हम आध्यात्मिक विषयों के ज्ञान की वृद्धि के लिये ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के अध्ययन की प्रेरणा भी करते हैं।

१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ९४१२९८५१२१

नव्य निराला छन्द

कवि- प्रोफेसर (डॉ.) सारस्वत मोहन मनीषी

नख से शिख तक वीरव्रती था, वीर वेश में चला गया,
तन–मन जीवन स्वाहा करके, राष्ट्र–तमस को जला गया।
तरल तूलिका थी मधूलिका, चित्र मित्र ले संग गया,
विकट–सुभट–उत्कट–जीवट था, सकल जीतकर जंग गया।
अर्जुन जैसा सिद्ध धनुर्धर, कभी न खाली वार गया,
दुस्साहस कर शत्रु शिविर को, घर में घुसकर मार गया।
सर्जिकल, एयर स्ट्राइक की, जब–जब परिचर्चा होगी,
तब–तब वीर विपिन रावत की, घर–घर अभ्यर्चा होगी।
जल–थल–नभ सेना अधिनायक, गायक वीर विजेता था,
निज पराक्रमों से रणपुंगव, अद्भुत अनुपम त्रेता था।
रखा जहाँ भी चरण आचरण, विजय स्वयं आ जाती थी,
वाणी में मोहन–सम्मोहन, सांस भैरवी गाती थी।
शायद असुर निकन्दन प्रभु को, हम से अधिक जरूरत थी,
मुस्कानों की मधुर वाटिका, वह मिठास की मूरत थी।
अंगारों के बीच बैठकर, उसको गाना भाता था,
थे जितने भी काम असम्भव, सम्भव करना आता था।
सेनानायक शान्तिविधायक, सेनानी वरदानी था,
दिव्य–भव्य नित–नव्य निराला, छन्द न उसका सानी था।
एक साथ कविता नाटक, यात्रा की सजग कहानी था,
ब्याज मूलधन लाजवाब, निर्व्याज नयन का पानी था।
हिमगिरि में भी अंगारा था, टंकारों में टंकारा,
आँसू पारावार बन गये, सबकी आँखों का तारा।
विस्मृति की निर्मम बाँहों में, हर्गिज झूल न पायेंगे,
भारत माँ के पुत्र मनीषी, तुमको भूल न पायेंगे।।

स्वास्थ्य

पालक और उड़द है गुणकारी

पालक -पालक का मतलब सबका पालनहार। वास्तव में भगवान ने इस शाक को पृथ्वी पर इसलिए भेजा है कि सम्पूर्ण मानव जगत् इसका सेवन कर अपना पालन-पोषण करे। पालक के उपयोग से मानव विभिन्न रोगों से विमुक्त होता है, और शारीरिक विकास कि ओर अग्रसर हो जाता है। भारत में यह गुणकारी शाक आसानी से मिल जाता है। पालक चीनोपोडिएसी कुल का शाक है। इसका वानस्पतिक नाम स्पिनेसिया औलिरेसिया है। अंग्रेजी में इसे स्पिनेच कहा जाता है। उत्तर भारत में इसे पालकी कहा जाता है। पालक में हीमोग्लोबिन की मात्रा ज्यादा होती है। पालक रस के सेवन से हीमोग्लोबिन में वृद्धि होती है, फलस्वरूप कुछ दिनों में शरीर में नए रुधिर का निर्माण होता है, और शरीर में नया उत्साह, नई शक्ति, जोश का संचार होता है। प्रकाशन विभाग की ग्रामीण विकास पर आधारित मासिक पत्रिका में छपे एक लेख के अनुसार १०० ग्राम पालक में २६ किलो कैलोरी ऊर्जा, प्रोटीन २.०%, कार्बोहाइड्रेट २.६%, नमी ६२%, वसा ०.७%, रेशा ०.६%, खनिज लवन ०.७% और रेशा ०.६% होता है। पालक में खनिज लवन जैसे कैल्सियम, लौह तथा विटामिन ए, बी, सी आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसी गुण के कारण इसे लाइफ प्रोटेक्टिव फूड कहा जाता है।

उड़द- मानव स्वास्थ के लिए दाल प्रोटीन का मुख्य अवयव है। उड़द में प्रोटीन के अलावा कैल्सियम, (Ca), फास्फोरस (F) भी उपस्थित होते हैं जो मानव की अस्थियों को सुदृढ़ करने लिए और उसके संतुलित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें पाया जाने वाला एमिनो अम्ल लायसीन की मात्रा उच्चकोटि की प्रोटीन प्रदान करती है। दालों में कम वसा व कार्बोहाइड्रेट प्रदान करने वाली यह उड़द की दाल बच्चों के भोजन हेतु सर्वोतम आहार है। उड़द की दाल का छिलका दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होता है। शाकाहारियों के लिए यह दाल सर्वोतम है, क्यूँकि यह उच्च कोटि की प्रोटीन प्रदान करती है।

– अमित कुमार गुप्ता, हाजीपुर (बिहार)
साभार- अन्तर्जाल

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मैं सीमा सैनी एक रिसर्च स्कॉलर हूँ। आज मुझे यह नवलखा महल देखने का सुअवसर मिला। नवलखा महल में मिली जानकारियों से वास्तविकता से अवगत हुई। जैसे रामायण से जुड़ी बहुत सारी अंधविश्वास और झूठी बातें जो हमें आज तक बताई गई थीं उसका ज्ञान हुआ। जैसे हनुमान जी को बन्दर कहा गया है लेकिन वे बन्दर नहीं थे। वे बहुत बड़े एक विद्वान् मनुष्य थे। सूर्पनखा की नाक काटी गई थी ऐसा हमें बताया गया था लेकिन सच यह है कि सूर्पनखा की कोई भी नाक नहीं काटी गई बल्कि गलत बात बोलने पर उसकी भत्सर्ना की गई थी। यहाँ आकर, यह सब बातें जानकर हमें बहुत ही अच्छा लगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं और मेरे पति नरेश खन्ना जी दिल्ली प्रशान्त विहार से उदयपुर यात्रा पर आए हुए हैं। यहाँ नवलखा महल में आकर आर्ट गैलरी में स्वामी जी की जीवन गाथा और सिद्धान्तों को पढ़कर मन गद्गद् हो गया और स्वामी जी के प्रति यह हृदय श्रद्धा से भर गया। ईश्वर करे ज्यादा से ज्यादा उनके सिद्धान्तों का प्रचार हो और लोग उनके द्वारा दिखाए गए राह पर चलते हुए अपना जीवन श्रेष्ठ बनाएँ। स्वामी जी को शत्-शत् नमन करते हुए यहाँ के सभी अधिकारियों का बहुत-बहुत धन्यवाद जो इतनी ज्ञानवर्द्धक बातें जानने हेतु ऐसी दीर्घा का निर्माण करवाया।

– विनीता खन्ना, दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश के पन्नों में

धनसारी के ठग

कथा सरित

कितने ही धूर्त्त लोग ऐसी माया रचते हैं कि बड़े-बड़े बुद्धिमान भी धोखा खा जाते हैं, जैसे धनसारी के ठग। ये लोग पाँच-सात मिलके दूर-दूर देश में जाते हैं। जो शरीर से डीलडाल में अच्छा होता है, उसको सिद्ध बनाते हैं। जिस नगर वा ग्राम में धनाढ्य होते हैं, उसके समीप जंगल में उस सिद्ध को बैठाते हैं। उसके साधक नगर में जाके अनजान बनके जिस किसी को पूछते हैं- तुमने ऐसे महात्मा को यहाँ कहीं देखा है?

वह महात्मा कौन और कैसा है?

साधक- बड़ा सिद्ध पुरुष है। मन की बातें बतला देता है। जो मुख से कहता है, वह हो जाता है। बड़ा योगीराज है। उसके दर्शन के लिए हम घर द्वार छोड़कर देखते-फिरते हैं। मैंने किसी से सुना वह महात्मा इधर की ओर आये हैं।

गृहस्थ- जब वह महात्मा तुमको मिलें तो हमसे कहना, दर्शन करेंगे और मन की बातें पूछेंगे।

इसी प्रकार दिन भर नगर में फिरते और प्रत्येक को उस सिद्ध की बात कहकर रात्रि में इकट्ठे सिद्ध साधक होकर खाते-पीते, सोते रहते हैं। फिर प्रातःकाल नगर वा ग्राम में जाके उसी प्रकार दो तीन दिन कहकर फिर चारों साधक किसी एक-एक धनाढ्य से बोलते हैं कि वह महात्मा मिल गये। तुमको दर्शन करना हो तो चलो। वे जब तैयार हो जाते हैं तब साधक उनसे पूछते हैं कि तुम क्या बात पूछना चाहते हो? हमसे कहो। कोई पुत्र की इच्छा करता, कोई धन, कोई रोग निवारण और कोई शत्रु जीतने की। उनको वे साधक ले जाते हैं।

सिद्ध साधकों ने जैसा संकेत किया होता है अर्थात् जिसको धन की इच्छा हो उसको दाहिनी ओर, जिसको पुत्र की इच्छा हो उसको सम्मुख, जिसको रोग निवारण की इच्छा हो उसको बाईं ओर और जिसको शत्रु जीतने की इच्छा हो उसको पीछे से ले जाके सामने वाले के बीच बैठाते हैं। जब नमस्कार करते हैं उसी समय वह सिद्ध उनसे बोलता है कि हमारे पास पुत्र नहीं रखा है, जो तू पुत्र की इच्छा करके हमारे पास आया है। इसी प्रकार धन वाले से बोलता है 'तू धन की इच्छा करके आया है फकीरों के पास धन कहाँ धरा है? रोग वाले से- तू रोग छुड़ाने की इच्छा करके आया है? हम वैद्य नहीं, जा किसी वैद्य के पास।'

परन्तु जब उसका पिता रोगी है तो उसका साधक अंगूठा, जो माता रोगी है तो तर्जनी, जो भाई रोगी है तो मध्यमा, जो स्त्री रोगी है तो अनामिका, जो कन्या रोगी है तो कनिष्ठिका अंगुली को चला देता है। उसको देख वह सिद्ध कहता है कि तेरा पिता रोगी है, तेरी माता, तेरा भाई, तेरी स्त्री और तेरी कन्या रोगी है। तब तो वे चारों बड़े मोहित हो जाते हैं। साधक लोग उनसे कहते हैं, देखो! जैसा हमने कहा था, वैसे हैं कि नहीं?

गृहस्थ बोलते हैं- हाँ, जैसा तुमने कहा था वैसे ही हैं। तुमने बड़ा उपकार किया और हमारा बड़ा भाग्य था, जो ऐसे महात्मा के दर्शन हुए।

साधक लोग कहते हैं कि ये महात्मा बहुत दिन रहने वाले नहीं हैं। जो कुछ इनसे आशीर्वाद लेना हो तो खूब सेवा करो।

वे गृहस्थ प्रशंसा करते घर की ओर चलते हैं। साधक भी उनके साथ-साथ जाते हैं, क्योंकि मार्ग में कोई उनका पाखण्ड खोल न देवे। उन धनाढ्यों का जो कोई मित्र मिला, उन सबसे प्रशंसा करते रहे। इसी प्रकार जो-जो साधकों के साथ जाते हैं उन-उन का वृत्तान्त सब कह देते हैं।

जब नगर में हल्ला होता है तब बहुत मनुष्यों का मेला जाकर बहुत ने पूछा कि महाराज! मेरे मन का वृतान्त कहिऐ। तब सिद्ध जी चुपचाप हो जाते हैं और कहने लगते हैं कि हमको बहुत दिक मत करो। उनके साधक भी सबसे कहने लगते हैं- 'जो तुम बहुत दिक करोगे तो चले जायेंगे।' उनमें से जो कोई बड़ा आदमी होता है, वह उसके साधक को बुला लेता है और कहता है कि हमारे मन की बात कहला दो तो हम मानें। साधक ने पूछा कि क्या बात है? धनाढ्य ने कहा। उसको उसी प्रकार संकेत से ले जाके बैठाया। उसने झट कह दिया। बात सब मेला भरने समझ लिया कि अहो! बड़े सिद्ध पुरुष हैं। कोई मिठाई, कोई पैसा, कोई रुपया, कोई अशर्फी, कोई कपड़ा और कोई सीधा सामग्री धरने लगे। फिर जब तक मानता रही तब तक लूटते रहे और 'किसी आँख के अंधे गाँठ के पूरे' से पुत्र होने के लिए आशीर्वाद दिया और सहस्र रुपये लेकर कहा कि तेरी भक्ति सच्ची होगी तो पुत्र होगा। इस प्रकार बहुत से ठग होते हैं, जिनकी विद्वान् ही परीक्षा कर सकता है। और कोई नहीं।

प्रेषक- सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत नेमदार गंज

समाचार

सी.डी.एस. श्री विपिन रावत सहित अन्य 12 सैन्य अधिकारियों को श्रद्धांजलि

१२ दिसम्बर २०२१ को आर्यसमाज, हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से तमिलनाडु के कुन्नूर में हुए हेलीकॉप्टर हादसे में सीडीएस श्री विपिन रावत सहित अन्य १२ सैन्य अधिकारियों के निधन पर यज्ञ कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने आर्य जगत् के प्रख्यात् कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी की एक मार्मिक कविता को प्रस्तुत कर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए रेखांकित किया कि इन शहीदों को कदापि भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

विस्मृति की निर्मम बाहों में हरगिज झूल न पायेंगे,
भारत माँ के पुत्र, मनीषी तुमको भूल न पायेंगे।

इस अवसर पर उन्होंने सी.डी.एस. एवं पूर्व थल सेना अध्यक्ष श्री विपिन रावत द्वारा देश की रक्षा के लिए किए गए कार्यों की सराहना की तथा कहा कि उनका निधन राष्ट्रीय क्षति है व देश ऐसे शहीदों को नमन करता है।

इस अवसर पर आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के प्रधान श्री भँवरलाल आर्य, संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री कृष्ण कुमार सोनी, श्री संजय शाण्डिल्य, श्री सुभाष कोठारी, पूर्व प्रधान श्रीमती ललिता मेहरा, श्रीमती सरला गुप्ता, श्री हजारी लाल आर्य सहित अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

श्रीमती परोपकारिणी सभा के निर्वाचन सम्पन्न

श्रीमती परोपकारिणी सभा के निर्वाचन १२-१३ नवम्बर २०२१ को

सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से श्री सत्यानन्द जी आर्य को प्रधान, मुनि सत्यजित् जी को मंत्री एवं श्री सुभाष नुवाल को कोषाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित किया गया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वेदपाल अब परोपकारिणी सभा के मुखपत्र परोपकारी के सम्पादक होंगे। राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायाधिपति श्री सज्जन सिंह जी कोठारी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित किया गया है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से उक्त सभी मान्य अधिकारियों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के चुनाव सम्पन्न

५ दिसम्बर २०२१ को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यालय में, सभा के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें राजस्थान की आर्य समाजों के १८४ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। निर्वाचन में सीकर के सांसद एवं आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी व इस न्यास के संरक्षक स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को प्रधान, दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा के संचालक आचार्य जीववर्द्धन शास्त्री को मंत्री और श्रीमती परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री श्री जयसिंह गहलोत; जोधपुर को कोषाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित किया गया है।

उप प्रधान के रूप में सर्वश्री देवेन्द्र कुमार; जयपुर, किशनलाल गहलोत; जोधपुर, रमेश गोस्वामी; कोटा, सत्यदेव आर्य; भरतपुर, अशोक आर्य; केकड़ी तथा आनन्द मोहन; बीकानेर को तथा कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सर्वश्री अंकुश आर्य, अमरचन्द, अशोक कुमार, डॉ. संदीपन कुमार, धर्मसिंह आर्य, बलवन्त सिंह, भँवर लाल आर्य, शशांक आर्य, स्वामी सुखानन्द, सत्यवीर आर्य, सवाईलाल गोयल, सुखराम आर्य, सुभाष चन्द्र शास्त्री, श्रीचन्द गुप्ता एवं हनुमान भाकर को चुना गया।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से उक्त सभी मान्य अधिकारियों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

परोपकारिणी सभा में संस्कार शिविर का आयोजन

आर्यवीर दल, राजस्थान के जिला स्तरीय शिविर के रूप में युवकों को आसन, प्राणायाम, जूड़ो-कराटे, व्यायाम प्रशिक्षण एवं संस्कार निर्माण के लिए २४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २०२१ तक एक शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन २४ दिसम्बर २०२१ को सायं ५.०० बजे होकर एवं समापन ३१ दिसम्बर २०२१ को प्रातः १०.०० बजे हुआ। इस अवसर पर सभा के अधिकारियों के अतिरिक्त आर्यवीर दल के श्री भवदेव शास्त्री एवं आचार्य कर्मवीर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

हलचल

श्री भँवर लाल आर्य का अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य का

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में निर्वाचन होने पर आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के उप प्रधान श्री के.के. सोनी ने उन्हें ओ३म् दुपट्टा, श्री अम्बालाल सनाढ्य ने पगड़ी और श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने उनका शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया तथा कहा कि यह उदयपुर के लिए गौरव की बात है कि यहाँ से राजस्थान आर्य प्रतिनधि सभा में श्री आर्य को प्रतिनिधित्व मिला।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से श्री आर्य को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

न्यास परिसर में दर्शकों की सुविधा हेतु जनरेटर का शुभारम्भ

डॉलर इन्डस्ट्रीज द्वारा दिए गये जनरेटर का उद्घाटन इसके प्रबन्ध निदेशक श्री विनोद गुप्त द्वारा बटन दबाकर दिनांक १७ दिसम्बर

२०२१ को न्यास परिसर में किया गया। आप अपने साथियों सहित श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, उदयपुर के अवलोकन हेतु दिनांक १७ दिसम्बर २०२१ को पधारे। इससे पूर्व माननीय अतिथियों का अभिनन्दन न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य

एवं अन्य अधिकारियों द्वारा मेवाड़ी पगड़ी एवं ओ३म् दुपट्टा पहनाकर किया गया।

इस अवसर पर श्री गुप्ता ने कहा कि मुझे नवलखा महल आकर सुखद अनुभूति हो रही है कि यहाँ से वैदिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार देश ही नहीं विदेशों तक किया जा रहा है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि श्री अशोक आर्य जी के नेतृत्व में न्यास अपने विविधि प्रकल्पों के माध्यम से वैदिक शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है। साथ ही उन्होंने प्रसन्नता की अभिव्यक्ति की कि उनके पिता माननीय श्री दीनदयाल जी गुप्त द्वारा प्रायोजित दीनदयाल गुप्त-सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका तथा सुरेश चन्द्र आर्य-दीनदयाल गुप्त चल चित्रालय के माध्यम से देश के लिए बलिदान देने वाले क्रान्तिकारियों का परिचय कराने के साथ-साथ महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा निर्देशित मानव जीवन निर्माण हेतु १६ संस्कारों को जीवन्त डायरोनोमा द्वारा चित्रित कर जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य नवलखा महल के माध्यम से किया जा रहा है।

इससे पूर्व स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि नवलखा महल जहाँ पर मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा सज्जन सिंह जी के आमंत्रण पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने साढ़े छह माह तक यहाँ प्रवास किया था तथा सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया था वह परिसर आर्य समाज के अथक प्रयासों के बाद राजस्थान सरकार से आर्य समाज को सुपुर्द करवाया गया उसके पश्चात् यहाँ के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती के उदार आशीर्वाद से इसका कायाकल्प किया गया तथा यह कार्य निरन्तर चल रहा है। वर्तमान में यहाँ सोलह संस्कारों का जीवन्त रूप में दिग्दर्शन कराने हेतु संस्कार वीथिका का निर्माण प्रगति पर है इसके लिए न्यास के सभी न्यासीगण तथा विशेष रूप से संरक्षक श्री दीनदयाल जी गुप्त व श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य का जितना धन्यवाद किया जाय कम है। आर्य ने बताया कि यहाँ से संचालित मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ देश विदेशों तक जाती है जिसके माध्यम से जनसामान्य प्रेरणा प्राप्त करता है।

- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

वैवाहिक विज्ञापन

Name : Hitesh Kumar Chanwani.
Date of Birth : 16th June1991
Time of Birth : 12:14 PM
Height : 5'4" (163cm)
Personality : Good Looking with fair Communicative skills
Qualification : M.Com
Profession : Working as Manager in Deutsche Bank Jaipur
Salary : Rs 9 Lakhs Per annum

Family Details

Father : Shri Kamlesh Kumar Chandwani (Working as Supervisor in M\s Choithram & Sons, Baharain)
Mother : Smt. Pooja Chandwani (House Wife)
Sister : Younger Sister Pursuing B.Tech in Electronics and Telecommunication, Pune.
Contact : +91 99281-70970

सत्यार्थ-पीयूष

वेद ज्ञान की आवश्यकता

तृतीय हेतु- वेद ज्ञान की परम आवश्यकता को इस रूप में भी समझा जा सकता है कि प्रभु ने प्रत्येक इन्द्रिय का सहायक देवता उत्पन्न किया है जिसके अभाव में वह इन्द्रिय निकम्मी ही है। उदाहरण के तौर पर आँख का सहायक देवता सूर्य है। सूर्य के अभाव में आँख बेकार है। वह अपना कार्य नहीं कर सकती। इसी प्रकार आकाश, वायु, जल, पृथ्वी आदि के बिना कर्णेन्द्रिय, त्वचा, रसना आदि कार्य नहीं कर सकतीं। इसी प्रकार इसी नियम के अन्तर्गत बुद्धि की सहायता के लिए प्रभु ने वेद ज्ञान प्रदान किया है जिसके बिना बुद्धि भी निकम्मी है।

चतुर्थ हेतु- वेद ज्ञान की परम आवश्यकता का एक और हेतु है। जैसे लोक में एक राजा अपने राज्य के नियमों को प्रकाशित करता है ताकि उसकी प्रजा उन नियमों की पालना करे। नियमों की अवज्ञा करने वाला दण्ड का भागी होता है। अगर राजा नियम नहीं बनावे तो किस आधार पर नियम तोड़ने पर प्रजा को दण्ड देगा? आप किसी को यह न बतावें कि अमुक स्थल पर जूते नहीं ले जा सकते और कोई जूते पहन कर चला जावे तो उस पर अर्थ-दण्ड कर देते हैं तो क्या इस व्यवस्था को उचित कहा जा सकेगा? नहीं! ठीक इसी प्रकार से प्रभु ने, क्योंकि मनुष्य द्वारा किए गए पाप-पुण्य का फल अपने अधीन रखा है और निश्चित फल दिया जावेगा यह व्यवस्था रखी है, अतएव पाप क्या है पुण्य क्या है यह बताना भी प्रभु का कर्त्तव्य है, यही उपदेश वेद के माध्यम से दयालु प्रभु ने किया है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान

य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन।
प्र च सुवाति सविता।। - ऋग्वेद ५/८२/१

हे मनुष्यों! जो ईश्वर वेद के द्वारा मनुष्यों को सब विद्याओं का उपदेश करता है, उसे ही परमगुरु मानना चाहिये।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों ?

अब प्रश्न यह उठता है कि वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों कहा जाता है? अन्य रामायण, महाभारत, बाइबल, कुरान आदि ग्रन्थ क्यों ईश्वरीय ज्ञान नहीं कहे जा सकते? इसका सरलतम उत्तर तो यह है कि वेद के अतिरिक्त ऊपर लिखित सभी ग्रन्थ काफी अर्वाचीन हैं। यथा रामायण त्रेता युग व महाभारत द्वापर के अन्त में प्रणीत हुई। इनके लेखक भी क्रमशः महर्षि वाल्मीकि व महर्षि वेदव्यास ज्ञात हैं। इसी प्रकार बाइबल लगभग २००० वर्ष पूर्व जन्मे ईसा मसीह के उपदेशों का उनके शिष्यों द्वारा किया गया संकलन है तो कुरान १४०० वर्ष पूर्व मुहम्मद साहब के माध्यम से अस्तित्व में आयी। यद्यपि कुरान को खुदा द्वारा प्रदत्त इलहाम कहा गया है परन्तु इसकी अर्वाचीनता इसके प्रभु प्रदत्त होने पर प्रश्नचिह्न लगाती है। दूसरी ओर वेद सृष्टि के प्रारम्भ में ही प्रभु द्वारा प्रदत्त ज्ञान है (सबसे पुरानी पुस्तक होना तो विश्व के सभी विद्वान् मानते हैं) और इसके प्रभु प्रदत्त होने का सबसे बड़ा प्रमाण है कि वेद के लेखक का नाम किसी को ज्ञात नहीं, कारण कि यह पौरुषेय रचना है ही नहीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन कसौटियों का वर्णन किया है जो कि ईश्वरीय ज्ञान के लिये आवश्यक हैं। महर्षिवर लिखते हैं-

'जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध-गुण-कर्म-स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है, वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वर कृत अन्य नहीं और जिसमें सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वररोक्त।

वेद ईश्वर प्रणीत

गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम्।
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण मिमते सप्त वाणीः।।

- ऋग्वेद १/१६४/२४

जिस जगदीश्वर ने वेद के अक्षर, पद, वाक्य, छन्द और अध्याय आदि रचे हैं, उसे सब मनुष्य धन्यवाद देवें।

जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्ति रहित ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है, वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य-कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध, शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है इस प्रकार के वेद हैं, अन्य बाइबल, कुरान आदि पुस्तकें नहीं। इसकी स्पष्ट व्याख्या बाइबल और कुरान के प्रकरण में तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में की जाएगी।' (स. प्र.सप्तम समुल्लास)

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

—Over 100 shades—
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CAPRI | ANKLE LENGTH | CHURIDAR | KURTI PANT
#GoGirlGo
Chitrangada Singh
Buy Online: www.dollarshoppe.in/
www.dollarglobal.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

शिवपुराण में बारह ज्योतिर्लिङ्ग लिखे हैं, उसकी कथा सर्वथा असम्भव है, नाम धरा है ज्योतिर्लिङ्ग और जिनमें प्रकाश का लेश भी नहीं। रात्रि को बिना दीप किये लिङ्ग भी अन्धेरे में नहीं दीखते। ये सब लीला पोप जी की हैं।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३३६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर